KGS IAS

KHAN GLOBAL STUDIES

Most Trusted Learning Platform

KHAN SIR

Most Trusted Learning Platform

GS PAPER- II (CSAT)

By Sanjeev Tiwari Sir

गद्यांश-1 (पर्यावरण)

- पर्यावरणवाद की पहली लहर में ही यह बात स्पष्ट तौर पर रेखांकित की जाने लगी कि आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था आर्थिक संवृद्धि तो लाएगी लेकिन इस संवृद्धि की क्षणभंगुरता भी उतनी ही स्वाभाविक होगी। सबसे बढ़कर औद्योगिक विकास की यह संकल्पना, जिसे बहुधा 'क्रांति' के रूप में बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है, उस विद्रूपता का सूचक है, जो मातृदेश और शहरों के विकास का बोझ उपनिवेश और गाँवों पर डालता है। यह अनायास नहीं है कि विकास की इस 'समस्या' की पहचान गाँव (Countryside) में रहने वाले विलियम वर्ड्सवर्थ और उपनिवेश निवासी महात्मा गांधी सबसे प्रभावी ढंग से करते हैं।

(शब्द संख्या-100)

Source: Environmentalism:

A Global History -Ramchandra Guha

1. इस परिच्छेद के लेखक का मत है कि-

(a) सभी पर्यावरणीय समस्याओं के लिये उपनिवेशवाद दोषी है।
(b) औद्योगिक विकास को क्रांति कहना गलत है।
(c) क्षेत्रीय असमानता औद्योगिक विकास का उपोत्पाद है।
(d) पर्यावरणवाद के आरंभिक चिंतक उपनिवेश से ही थे।

गद्यांश-2 (शिक्षा)

- ऐसी साक्षरता जो शब्दों के अलावा परिस्थिति का बोध कराती है, शिक्षा बन जाती है। इसके विपरीत जब शिक्षा जीवन और समाज की परिस्थिति से कट है तब वह साक्षरता बनकर रह जाती है। 20वीं सदी में शिक्षा का ऐसा अवमूल्यन भारत समेत उन सभी देशों में हुआ है, जो इंग्लैंड या अन्य यूरोपीय देशों के उपनिवेश रहे हैं और अब नव-उपनिवेशीय अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को निभा रहे हैं। भारत में बच्चों की शिक्षा वस्तुतः साक्षरता से भिन्न नहीं है, क्योंकि वह बच्चों को समाज की सांस्कृतिक चेतना से जोड़ने की जगह बेगाना बनाने का साधन बना दी गई है। बचपन जीवन का एक हिस्सा न बनकर एक चरण बन गया है, जिसमें रहते हुए जीवन की तैयारी की जा सकती है, जीवन जिया नहीं जा सकता। स्कूल की चार दीवारी केवल सुरक्षा का साधन नहीं रह गई है, वह बचपन और सामाजिक जीवन को एक दूसरे से अलग रखने वाली सीमा बन गई है।

(शब्द संख्या-156)

Source: राज, समाज और शिक्षा: कृष्ण कुमार

2. इस परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्क संगत और निर्णायक संदेश कौन-सा है?

(a) पश्चिमी देशों ने उपनिवेशों की शिक्षा व्यवस्था को बर्बाद कर दिया।

(b) भारतीय शिक्षा नीति पुरानी पद्धति पर आधारित है।

(c) स्कूल बचपन को मारने का उपकरण बन गया है।

(d) सामाजिक संदर्भ से विलग शिक्षा औचित्यहीन है।

गद्यांश-3 (शिक्षा)

- भारत में बहुत कम लोग यह मानते हैं कि उनके बच्चों का जीवन राजनीति द्वारा नियंत्रित होता है। बच्चों के बारे में सोचते समय ज़्यादातर माता-पिता परिवार की परिधि के बाहर नहीं जाते। परिवार को वे एक राज्य निरपेक्ष इकाई के रूप में देखते हैं और सत्ता को परिवार निरपेक्ष इकाई के रूप में। इस दृष्टिकोण ने परिवार को सत्ता के लिये अत्यंत उपयोगी सिद्ध किया। लोग सोचते हैं कि बच्चों और बूढ़ों की देखभाल जैसे काम परिवार के जिम्मे हैं और सरकार की ज़िम्मेदारी विदेशी नीति, आयात-निर्यात जैसे बड़े कामों की देख-रेख करना। इस तरह के श्रम-विभाजन का भ्रम लोगों को इस समझ से वंचित रखता है कि उनके बच्चे राजनीतिक नियंत्रण से उतने ही प्रभावित होते हैं, जितने वे स्वयं।

(शब्द संख्या-122)

Source: राज, समाज और शिक्षा: कृष्ण कुमार

1. परिवार और राज्य को परस्पर पृथक् इकाई मानना एक भ्रांत धारणा है।
2. राजनीतिक प्रभाव को समझे बिना बाल जीवन का विश्लेषण अपूर्ण है।
3. उपर्युक्त परिच्छेद के संदर्भ में, निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं-

❖ उपर्युक्त में से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

गद्यांश-4 (पर्यावरण)

- जर्मन रूमानी परंपरा में पर्यावरणवाद देशभक्ति के साथ ही सहयुग्मित है क्योंकि किसान, जंगल और राष्ट्र मिलकर एक संपूर्ण अंग का निर्माण करते हैं। 1920 के दशक में इस भावना को और प्रोत्साहन मिला, जब जर्मनी में राष्ट्रवादी विचार के वाहक के रूप में नाजीवाद का उभार हो रहा था। नाजीवादी विचारकों ने वन संरक्षण को राष्ट्रीय कर्त्तव्य घोषित किया। यहाँ तक कि नाजी पत्रिका इस बात से भी चिंतित थी कि बढ़ते शहरीकरण से कृषक चिंतन पद्धति और ग्रामीण जीवन शैली का हास हो रहा है, जिससे राष्ट्रीय शक्ति कमज़ोर हो रही है। हिटलर के बाद सबसे शक्तिशाली नाजी नेता हर्मन गोरिंग ने स्वयं को 'मास्टर ऑफ जर्मन फॉरेस्ट' नियुक्त किया। नाजीवाद और पर्यावरण के मध्य इस दृश्यमान आत्मीयता से कुछ विद्वान यह निष्कर्ष निकालने लगे कि सर्व व्यवस्था पर्यावरणवाद की हितैषी होती है। एक तथ्य इस निष्कर्ष को गलत ठहराता है कि नाजी जर्मनी में उपभोक्तावाद को खूब बढ़ावा मिला।

(शब्द संख्या -163)

Source: A Global History – Guha

4. निम्नलिखित में से कौन-सी एक उपर्युक्त परिच्छेद की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है?

(a) परंपरावाद और पर्यावरणवाद परस्पर पूरक होते हैं।

(b) पर्यावरणवाद और नाजीवाद का संबंध एकरेखीय नहीं है।

(c) नाजियों के लिये पर्यावरण राष्ट्रीय चेतना को उग्र करने का एक उपकरण था।

(d) लोकतंत्र की अपेक्षा निरंकुशतावाद अधिक पर्यावरण हितैषी है।

गद्यांश-5 (पर्यावरण)

- राजनेताओं और जन-प्रतिनिधियों के दीर्घावधिक चिंतन के कर्तव्य के रूप में अपने देश के नागरिकों और विश्व के प्रति मुख्य भूमिका और उत्तरदायित्व हैं। उन्हें उत्कृष्ट अनुसंधानकर्ताओं और वैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा की गई स्पष्ट वैज्ञानिक सलाह को नज़रअंदाज नहीं करना चाहिये बल्कि उसे गंभीरतापूर्वक सुनना चाहिये और तद्नुसार कार्य करना चाहिये तथा जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न जोखिमों के विरुद्ध अपने लोगों की सुरक्षा के उपाय करने चाहिये। भारत संसाधनों की गंभीर कमी के बावजूद ऊर्जा दक्षता में वृद्धि करके और नवीकरणीय ऊर्जा का अधिक प्रयोग करके महत्त्वाकांक्षी अनुकूलन और न्यूनीकरण कार्रवाइयाँ कर रहा है। इस प्रयोजन के लिये राष्ट्रीय निधियों का विशाल कोष आवंटित किया गया है।

(शब्द संख्या-89)

Source: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की पत्रिका 68वाँ अंक 'जलवायु परिवर्तन विशेषांक'

5. उपर्युक्त परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत निष्कर्ष (इन्फरेंस) निकाला जा सकता है?

(a) जलवायु परिवर्तन का संदर्भ नीति निर्माण में प्राथमिक होना चाहिये।
(b) राजनेता जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति उदासीन हैं।
(c) उन्नत तकनीक ही जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान कर सकता है।
(d) नीति निर्माण में पर्यावरण वैज्ञानिकों को शामिल किया जाना चाहिये।

गद्यांश-6 (पर्यावरण)

- कृषि क्षेत्र जलवायु परिवर्तन के कारणों का समाधान है तथा यह जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का प्रथम शिकार भी है। संशोधित कृषि उत्पादन प्रक्रिया, जैसे कि जैविक कृषि प्रणाली जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने में सक्षम है। जैविक कृषि प्रणाली का जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने का सामर्थ्य मुख्य रूप से उसके कृत्रिम कृषि रसायनों के उपयोग पर रोक एवं मृदा कार्बन स्थिरीकरण क्षमता के आधार पर प्रमाणित हुआ है। इसीलिये जैविक कृषि प्रणाली न केवल जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान है बल्कि टिकाऊ विकास की बुनियाद भी है।

(शब्द संख्या-89)

Source: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की पत्रिका 68वाँ अंक 'जलवायु परिवर्तन विशेषांक'

6. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार जैविक कृषि से संबंधित निम्नांकित कथनों पर विचार करें-

1. जैविक कृषि कार्बन स्थिरीकरण में सहायक होता है।
2. जैविक कृषि की उत्पादकता उच्च होती है।
3. केवल जैविक कृषि प्रणाली ही जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने में सक्षम है।

❖ उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) 1 तथा 3

(c) 1 तथा 2

(d) सभी कथन सही हैं।

गद्यांश-7 (पर्यावरण)

- भारत ने जीएचजी उत्सर्जनों को कम करने और जलवायु परिवर्तन के परिणामों से निपटने के लिये एक महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संधि 'संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन कार्यढाँचा कन्वेशन (यूएनएफसीसीसी)' करवाने में अग्रणी एवं सृजनात्मक भूमिका निभाई है। भारत ने जलवायु परिवर्तन कन्वेंशन में समान और साझा, किंतु भिन्न-भिन्न उत्तरदायित्व (सीबीडीआर), जो इसका आधारभूत सिद्धांत है, को अंतः स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया। सीबीडीआर का सिद्धांत 'मानवता की साझी विरासत' की भावना से बना है, जिसमें वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं में विकसित और विकासशील देशों के योगदान में ऐतिहासिक अंतर को और इन समस्याओं के निराकरण में उनकी संबंधित आर्थिक और तकनीकी क्षमताओं में अंतर को स्वीकार किया गया है।

(शब्द संख्या-110)

Source: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की पत्रिका 'पर्यावरण' 68वाँ अंक 'जलवायु परिवर्तन विशेषांक

7. गद्यांश में प्रयुक्त वाक्यांश 'मानवता की साझी विरासत' की भावना से क्या तात्पर्य है?

(a) जलवायु परिवर्तन में सभी देशों का योगदान समान, किंतु उत्तरदायित्व भिन्न-भिन्न है।

(b) जलवायु परिवर्तन में विकसित देशों का योगदान कम है, किंतु निराकरण में वे सबसे आगे हैं।

(c) वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं की उत्पत्ति में विकसित देश विकासशील देशों से कहीं आगे हैं, किंतु उनके निराकरण में अब सभी देशों को बराबरी से आगे आना होगा।

(d) वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं की उत्पत्ति में सभी देश अपने योगदान के अनुसार अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करेंगे।

गद्यांश-8 (पर्यावरण)

- सरकार सृजन-आधारित प्रोत्साहनों, पूंजी और ब्याज सहायता, व्यवहार्य अंतराल वित्त व्यवस्था, रियायती वित्त व्यवस्था आदि जैसे विभिन्न प्रोत्साहनों का प्रस्ताव करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों के अभिग्रहण को प्रोन्नत करने में सक्रिय भूमिका अदा कर रही है। राष्ट्रीय सौर मिशन का उद्देश्य जीवाश्म आधारित ऊर्जा विकल्पों के साथ पूर्ण सौर ऊर्जा बनाने के परम उद्देश्य सहित ऊर्जा सृजन और अन्य उपयोगों के लिये सौर ऊर्जा के विकास और प्रयोग को प्रोन्नत करना है। राष्ट्रीय सौर मिशन का उद्देश्य दीर्घावधि नीति के माध्यम से बड़े पैमाने या विस्तारवादी लक्ष्यों, सामूहिक आर एंड डी और महत्त्वपूर्ण कच्ची सामग्रियों के घरेलू उत्पादन, घटकों और उत्पादों के माध्यम से देश में सौर ऊर्जा सृजन की लागत कम करना है।

(शब्द संख्या-115)

Source: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की पत्रिका 'पर्यावरण' का 68वाँ अंक 'जलवायु परिवर्तन विशेषांक'

8. उपर्युक्त परिच्छेद का मूल निहितार्थ है-

(a) राष्ट्रीय सौर मिशन की विशेषता बताना।

(b) नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन का महत्त्व बताना।

(c) नवीकरणीय ऊर्जा के प्रोत्साहन हेतु किये गए सरकारी प्रयास को बताना।

(d) नवीकरणीय ऊर्जा की तकनीक बताना।

गद्यांश-9 (पर्यावरण)

- पिछले दो दशकों में एकत्र किये गए आँकड़ों के आधार पर वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला कि प्रतिवर्ष धीरे-धीरे सर्दियों का न्यूनतम तापमान निरंतर बढ़ता जा रहा है, जिसके कारण उस समय सभी पक्षियों ने एक साथ उत्तर की ओर प्रवास नहीं शुरू किया बल्कि कई गर्म अनुकूल प्रजातियों ने उत्तर में कुछ और समय व्यतीत करना प्रारंभ किया। गर्म अनुकूलन वाली प्रजातियों के बीच अन्योन्य क्रियाओं को प्रभावित कर सकता है। साथ ही यह भी संभव है कि कुछ उत्तर भाग में रहने वाले पक्षियों के साथ अन्योन्य क्रियाओं से कुछ नई प्रजातियों का प्रादुर्भाव हो।

(शब्द संख्या-96)

Source: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की पत्रिका 'पर्यावरण' 68वाँ अंक 'जलवायु परिवर्तन विशेषांक

9. उपर्युक्त परिच्छेद में लेखक की मूल चिंता क्या है?

(a) सर्दियों में तापमान का बढ़ जाना।

(b) पक्षियों के प्रवसन का प्रभावित होना।

(c) नई प्रजातियों का जन्म लेना।

(d) जलवायु परिवर्तन से होने वाला प्रजातिगत फेरबदल।

गद्यांश-10 (विज्ञान प्रौद्योगिकी)

- सूचना प्रौद्योगिकी और जैव प्रौद्योगिकी की दोहरी क्रांति ने न केवल अर्थव्यवस्था और समाज को पुनः संरक्षित किया है बल्कि इसने शरीर और मस्तिष्क की संरचना को भी प्रभावित किया है। अतीत में हम मनुष्य ने बाहर की दुनिया के बारे में बहुत कुछ सीखा पर अपने अंदर की दुनिया के बारे में हम बहुत कम जानते थे। हम ये जान गए कि किस प्रकार बांध बनाकर नदी के बहाव को रोका जा सकता है। पर हम उम्र के बहाव को रोकने में अक्षम रहे। हमने सिंचाई प्रतिरूप को तो सीख लिया पर मस्तिष्क प्रतिरूपण नहीं जान पाए। नींद खराब करते मच्छर को मारने की शक्ति तो इसमें थी पर नींद से जगाते विचारों को समाप्त करने की शक्ति नहीं थी पर सूचना प्रौद्योगिकी और जैव प्रौद्योगिकी की दोहरी क्रांति हमें अंदर की दुनिया को बदल देने की शक्ति भी, प्रदान करेगी। इसके बाद हम सीख जाएंगे कि जीवन को कैसे विस्तारित किया जा सकता है। कैसे मस्तिष्क को डिज़ाइन करना है और कैसे अपने विवेक से विचारों को मार देना है? इसका दुष्परिणाम क्या होगा, यह हमें नहीं पता।

(शब्द संख्या-179)

Source: 21 Lessons for the 21st Century: Uval Noah Harari

10. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुरूप निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-

1 . अतीत की अपेक्षा अब हम अपने अंदर की दुनिया के बारे में अधिक जानने लगे हैं।
2. सूचना प्रौद्योगिकी और जैव प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को गुणात्मक रूप से बदल दिया है।
3. बाहर की दुनिया अंदर की दुनिया से कम जटिल है। उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) 1 तथा 2
(c) 1 तथा 3
(d) 1, 2 तथा 3

गद्यांश-11 (पर्यावरण)

- आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो प्रज्ञता (Wisdom) की केंद्रीय धारणा स्थायित्व ही है। हमें अनिवार्य रूप से स्थायित्व के अर्थशास्त्र का अध्ययन करना चाहिये। एक सीमित उद्देश्य की पूर्ति की दिशा में विकास हो सकता है, किंतु कभी भी असीमित और सामान्य विकास नहीं हो सकता, जैसा कि गांधीजी कहते भी हैं- "पृथ्वी पर हरेक की आवश्यकता पूर्ति के लिये सब कुछ है पर किसी की लोभ पूर्ति के लिये कुछ नहीं है" स्थायित्व की धारणा ऐसे हिंसक अभिवृत्ति से असंगत बैठती है, जो इस बात से आनंदित होती है कि जो हमारे पिता के लिये विलासिता का साधन था, वो हमारी आवश्यकता है। वैसे प्रौद्योगिकीय 'निदान' जो पर्यावरणीय 'समस्या' उत्पन्न करते हैं, त्याज्य हैं। बड़ी-बड़ी मशीनें जो धन तो जमा करती हैं परंतु पर्यावरण के प्रति हिंसक हैं, प्रगति का प्रतिनिधित्व नहीं करते। यह प्रज्ञता के भी विरुद्ध है। प्रज्ञता विज्ञान और प्रौद्योगिकी के नए उन्मुखीकरण की मांग करता है, जो आंगिक, जेंटल, अहिंसक और खूबसूरत हो।

(शब्द संख्या-156)

Source: The Economics of Permanence: E.F. Schumacher

11. उपर्युक्त परिच्छेद में निम्नलिखित पूर्वधारणाएँ बनाई गई हैं-

1. प्रौद्योगिकी का विकास अनिवार्य रूप से प्रकृति को हानि पहुँचाता है।
2. आर्थिक संवृद्धि प्रगति का पर्याय नहीं है।

इनमें से कौन-सी पूर्वधारणा/पूर्वधारणाएँ वैध है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

गद्यांश-12 (पर्यावरण)

- IPCC की एक रिपोर्ट के मुताबिक कार्बन उत्सर्जन को कम करके 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य को पूरी तरह से प्राप्त करना अब लगभग असंभव हो गया है। इसके मुताबिक, उत्सर्जन की वर्तमान दर यदि बरकरार रही तो ग्लोबल वार्मिंग 2030 से 2052 के बीच 1.5 डिग्री सेल्सियस को भी पार कर जाएगा।
- फिलहाल दुनिया 2015 के पेरिस समझौते के घोषित उद्देश्य के अनुसार, ग्लोबल वार्मिंग में 2 डिग्री सेल्सियस से अधिक वृद्धि को रोकने के लिये प्रयास कर रही है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिये, 2010 के मुकाबले ग्रीनहाउस गैस स्तर को 2030 तक मात्र 20 प्रतिशत कम करना है और वर्ष 2075 तक कुल शून्य उत्सर्जन स्तर का लक्ष्य प्राप्त करना है। कुल शून्य उत्सर्जन तब हासिल किया जा सकेगा, जब कुल उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को वनों जैसे प्राकृतिक कार्बन सिंकों द्वारा अवशोषित कर संतुलित कर लिया जाएगा या तकनीकी हस्तक्षेप के द्वारा वातावरण से अतिरिक्त कार्बन डाइऑक्साइड को हटा दिया जाएगा। पिछली रिपोर्टों में, जो कि पर्यावरण को लेकर वैश्विक कार्रवाई का आधार बनी, IPCC ने कहा है कि यदि वैश्विक औसत तापमान 2 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाता है तो जलवायु परिवर्तन 'अपरिवर्तनीय' और 'विनाशकारी' हो सकता है।

- रिपोर्ट बताती है कि 1.5 डिग्री सेल्सियस से 2 डिग्री सेल्सियस तक का संक्रमण जोखिमों से भरा है। यदि ग्लोबल वार्मिंग 2 डिग्री सेल्सियस के स्तर को पार करती है तो इसका असर IPCC की पिछली रिपोर्ट में कथित विनाश के मुकाबले कई गुना ज्यादा विनाशकारी होगा। तटीय राष्ट्रों और एशिया तथा अफ्रीका की कृषि अर्थव्यवस्था सबसे ज़्यादा प्रभावित होगी। फसल की पैदावार में गिरावट, अभूतपूर्व जलवायु अस्थिरता और संवेदनशीलता 2050 तक गरीबी को बढ़ाकर सैकड़ों मिलियन के आँकड़े तक पहुँचा सकती है।
- भारतीय तटों पर समुद्री जल-स्तर में प्रति दशक 1 सेमी. की वृद्धि दर्ज की गई है। मानसून की तीव्रता के साथ हिमखंडों का त्वरित गति से पिघलना हिमालयी क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं का कारण बन सकता है। ग्लोबल वार्मिंग को 2 डिग्री सेल्सियस तक पहुँचने से रोकने पर होने वाले फायदों में समुद्री जल-स्तर की वृद्धि दर में कमी, खाद्य उत्पादकता, फसल पैदावार, जल संकट, स्वास्थ्य संबंधी खतरे और आर्थिक संवृद्धि के संदर्भ में जलवायु से जुड़े खतरों में कमी की संभावना के अलावा आर्कटिक महासागर में समुद्री बर्फ के पिघलने की दर में कमी के अनुमान के रूप में की गई है।

(शब्द संख्या-383)

Source: ग्लोबल वार्मिंग पर IPCC की रिपोर्ट

12. पेरिस समझौते, 2015 में तापवृद्धि के घोषित लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रहने पर सर्वाधिक दुष्प्रभाव पड़ेगा?

(a) विकसित राष्ट्रों पर
(b) विकासशील राष्ट्रों पर
(c) तटीय व द्वीपीय राष्ट्रों पर
(d) उच्च अक्षांश पर स्थित राष्ट्रों पर

13. उपर्युक्त परिच्छेद में सर्वाधिक तार्किक व तर्कसंगत निष्कर्ष निकाला जा सकता है-

(a) उत्सर्जन की यदि वर्तमान दर जारी रही तो ग्लोबल वार्मिंग 2030 से 2052 के बीच 1.5 डिग्री सेल्सियस को पार कर जाएगा।

(b) ग्लोबल वार्मिंग से एशिया व अफ्रीका की कृषि अर्थव्यवस्था पर सर्वाधिक दुष्प्रभाव पड़ेगा।

(c) वैश्विक औसत तापमान की क्रांतिक सीमा 2°C है, जिससे ज़्यादा तापवृद्धि अपरिवर्तनीय व विनाशकारी जलवायु परिवर्तन का कारण बनेगी।

(d) पेरिस समझौते में तापवृद्धि की घोषित सीमा को प्राप्त करने के लिये 2010 के मुकाबले ग्रीनहाउस गैस के स्तर को 2030 तक मात्र 20 प्रतिशत तक कम कर प्राप्त किया जा सकता है।

14. ग्लोबल वार्मिंग को 2° सेंटीग्रेड तक पहुँचने से पहले रोकने पर होने वाले लाभों में शामिल होंगे-

1. आर्कटिक महासागर में समुद्री बर्फ पिघलने की दर में कमी
2. स्वास्थ्य संबंधी खतरों में वृद्धि
3. फसल पैदावार में कमी
4. फसल उत्पादकता में वृद्धि

(a) केवल 1

(b) केवल 1 व 3

(c) केवल 1 व 4

(d) उपरोक्त सभी

गद्यांश-13 (पर्यावरण)

- वायु प्रदूषण का उभरता मुद्दा विशेष रूप से मेट्रो शहरों में उत्तरोत्तर गंभीर सरोकार बनता जा रहा है। काफी संख्या में शहर और कस्बे ऐसे हैं जो प्रदूषकों, विशेष रूप से कणिकीय पदार्थ के संबंध में मानकों को पूरा नहीं करते हैं। दिल्ली सहित कुछ शहरों में कणिकीय पदार्थों का संकेंद्रण मानक से काफी अधिक अर्थात् तीन से चार गुना या इससे भी अधिक है। वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981 तथा पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 जो इस समस्या से निपटने के लिये तंत्र एवं प्राधिकरण निर्धारित करता है, के विभिन्न प्रावधानों के तहत वायु प्रदूषण को कम करने के लिये वायु का गुणवत्ता विनियमन किया जाता है एवं कार्रवाई की जाती है। पिछले 5 वर्षों के लिये दिल्ली और एनसीआर के लिये उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, कणिकीय पदार्थों (पीएम 10 और पीएम 2.5) का संकेंद्रण संपूर्ण क्षेत्र के लिये प्रमुख सरोकार है, तथापि दिल्ली, मेरठ और फरीदाबाद में नाइट्रोजन ऑक्साइड के संकेंद्रण में कुछ उल्लंघन देखे गए हैं।

- पिछले सभी 5 वर्षों में सभी स्थानों पर सल्फर डाईऑक्साइड का संकेंद्रण मानक सीमा के अंदर है। पीएम 10 श्वसनीय स्थूल कण होते हैं, जिनका व्यास 2.5 से 10 माइक्रोमीटर के बीच होता है तथा पीएम 2.5 बारीक कण होते हैं जिनका व्यास 2.5 माइक्रोमीटर या कम होता है।

(शब्द संख्या-227)

Source: पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय रिपोर्ट

15. निम्नांकित में से कौन-सा कथन सही है?

(a) PM 10 जैसे स्थूल कणों का व्यास श्वसनीय सीमा से परे होता है और इसलिये PM 2.5 कणों की तुलना में ये कम हानिकारक होते हैं।

(b) 2.5 माइक्रोमीटर से कम व्यास वाले कणिकीय पदार्थ PM 2.5, जबकि इससे अधिक व्यास वाले कणिकीय पदार्थ PM 10 कहलाते हैं।

(c) दिल्ली और इसके आस-पास के क्षेत्रों में नाइट्रोजन ऑक्साइड का संकेंद्रण हमेशा मानक सीमा का पालन करने में सफल नहीं रह पाया।

(d) दिल्ली व इसके आस-पास के क्षेत्रों में नाइट्रोजन ऑक्साइड को छोड़कर सभी कणिकीय पदार्थों का संकेंद्रण मानक सीमा के अंदर ही रहा।

गद्यांश-14 (पर्यावरण)

- बहुसंख्यक लोगों के लिये नम भूमि जीवन रेखा होने के साथ-साथ ताजा जल का एक मुख्य स्रोत है। प्रचुर जैव विविधता के परिपोषण के अतिरिक्त यह मानवता को विभिन्न प्रकार की पारिस्थितिकी सेवाएँ प्रदान करता है। तथापि मानव केंद्रित क्रियाकलापों के कारण नम भूमियों का स्तर गिरता जा रहा है। नम भूमियों पर मुख्य दबाव का कारण आर्द्रता व्यवस्था का खंडित होना, निम्नीकृत अपवाह क्षेत्र से गादीकरण, प्रदूषण, आक्रमणकारी जातियों का फैलाव एवं संसाधनों का अति दोहन।

  नम भूमियों के संरक्षण तथा इसके गिरते स्तर पर नियंत्रण करने हेतु राष्ट्रीय नम भूमि संरक्षण कार्यक्रम (एन.डब्ल्यू.सी.पी.) की शुरुआत 1987 में की गई तथा चिह्नित नम भूमियों के संरक्षण एवं प्रबंधन के लिये कार्य योजना लागू करने हेतु राज्य सरकारों को वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

- संभावित नमभूमियों को संरक्षित रखने की अपनी प्रतिबद्धता के तौर पर भारत 1982 में रामसर सम्मेलन का एक हस्ताक्षरकर्ता बना था। इस सम्मेलन के अनुसार भारत नम भूमियों के विवेकपूर्ण सदुपयोग व संरक्षण के लिये राष्ट्रीय स्तर पर कार्यवाही करने एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिये प्रतिबद्ध है।

(शब्द संख्या-180)

Source: पर्यावरण, वन और जलवायु मंत्रालय रिपोर्ट

16. उपर्युक्त परिच्छेद में निम्नलिखित में से कौन-सा सर्वाधिक तार्किक व तर्कसंगत निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(a) नम भूमियों का संरक्षण जैव विविधता के परिपोषण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

(b) राष्ट्रीय नमभूमि संरक्षण कार्यक्रम के तहत भारत के सभी छोटे-बड़े नमभूमियों को शामिल किया गया है।

(c) नम भूमियों के गिरते स्तर के लिये प्रदूषण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है।

(d) भारत द्वारा 1982 में रामसर कन्वेंशन का अनुसमर्थन नम भूमियों को संरक्षित रखने के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

गद्यांश-15 (दर्शन)

- सतत्, परम स्वतंत्र और नित्य आदि सारे शब्द काल पर निर्भरता दर्शाते हैं और जिसका अस्तित्व काल पर निर्भर है, वह सत्य नहीं हो सकता। यदि कोई सतत् है भी तो वह है स्मृति और स्मृति किसी भी तरह का प्रक्षेपण कर सकती है। स्मृति हर प्रकार का भ्रम उत्पन्न कर सकती है परंतु जो सत्य है उसे खोज पाने के लिये मन का काल की प्रक्रिया से मुक्त होना ज़रूरी है। मन का स्मृति से, अनुभवकर्त्ता तथा जिसे अनुभव किया जाता है, उस विषय से मुक्त होना आवश्यक है। सत्य क्या है, इसे जानने के लिये मन का बिना निरंतरता के क्षण-प्रतिक्षण मुक्त होते रहना आवश्यक है।

(शब्द संख्या-108)

Source: शिक्षा क्या है: जे. कृष्णमूर्ति

17. निम्नलिखित में से कौन-सा उपर्युक्त परिच्छेद का सर्वाधिक तार्किक उपनिगमन (कोरोलरी) है?

(a) स्मृतियाँ सत्य के अन्वेषण को बाधित करती है।

(b) भ्रम न हो तो सत्य पाया जा सकता है।

(c) बंधन मुक्त मन ही सत्य को पा सकता है।

(d) अनुभव की पवित्रता सत्यान्वेषण की प्राथमिक शर्त है।

गद्यांश-16 (पर्यावरण)

- कॉयर अथवा नारियल के रेशे से बने उत्पाद न केवल लागत प्रभावी होते हैं बल्कि पर्यावरण हितैषी भी होते हैं। ऐसे समय में जब विविध पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर एक व्यापक वैश्विक विमर्श छिड़ा हो तो पर्यावरण अनुकूल उत्पादों की मांग का अचानक से बढ़ जाना स्वाभाविक है। यही कारण है कि आज से कुछ दशक पहले जब कॉयर या इसके मज्जे (वह पदार्थ, जो नारियल के रेशे को उसके छिलके से जोड़ता है) का परंपरागत रूप से सीमित अनुप्रयोग किया जाता था अथवा समस्यामूलक कचरा समझकर यूँ ही छोड़ दिया जाता था, वहीं आज के समयमें यह अपने बहुविध अनुप्रयोग के कारण काफी लोकप्रिय हो रहा है। सड़क निर्माण से लेकर कागज उद्योग तक में यह एक बेहतर विकल्प के रूप में उभरा है। लिगनिन और सेल्यूलोज जैसे विशुद्ध प्राकृतिक तत्त्वों से बना कॉयर अन्य किसी भी प्राकृतिक रेशे (ऊन, कपास, रेशम) की तुलना में ज़्यादा मज़बूत व दृढ़ होता है।

- अपने जैव निम्नीकारक (Bio Degradable) गुणों की वजह से यह न केवल कृत्रिम व रासायनिक रेशों (नायलॉन, पॉलिस्टर आदि) का विकल्प बनकर उभरा है बल्कि विभिन्न पर्यावरणीय समस्या पैदा करने वाले प्लास्टिक का प्रतिस्थापक भी साबित हो सकता है। ज्ञातव्य है कि आज कई राज्यों में प्लास्टिक पर प्रतिबंध तो आरोपित किए जा रहे हैं, किंतु उसका विकल्प देने में सरकार के पसीने छूट रहे हैं। ऐसे में नारियल के रेशे से बना थैला न केवल सस्ता होगा बल्कि पर्यावरण पर कोई दुष्प्रभाव भी उत्पन्न नहीं करेगा। इस तरह देखा जाए तो नारियल के रेशे अपने उपयोग में पर्यावरण के अनुकूल हैं, किंतु अपनी कुछ अनूठी विशेषताओं की वजह से न केवल ये पर्यावरण के अनुकूल बल्कि उसके रक्षक भी साबित हो रहे हैं। नारियल के रेशे का एक विशेष गुण यह होता है कि उसके आयतन में परिवर्तन हुए बिना जल अवशोषण की उसकी क्षमता काफी बेहतर होती है। इसका लाभ यह होता है कि यह मृदा नमी का लंबे समय तक संरक्षण कर पौधों के विकास में सहायक होती है ।

इस तरह मृदा की कमी अथवा शुष्क मृदा वाले क्षेत्रों में भी इसका प्रयोग कर विभिन्न प्रकार की फसलें पैदा की जा सकती हैं। साथ ही सड़क व बांध निर्माण में इसका प्रयोग कर मृदा क्षरण वह अपरदन को रोका जा सकता है, क्योंकि यह मिट्टी को मजबूती से पकड़े रखता है और उसको तेज बहाव में कटाव से बचाता है। इसके अलावा कॉयर आसानी से जलता नहीं है और एक बेहतर ताप-प्रतिरोधक की भाँति कार्य कर सकता है। यह ध्वनि का भी एक अच्छा अवशोषक होता है। इसलिये विभिन्न स्थानों पर इसका प्रयोग कर ध्वनि प्रदूषण की समस्या को कम किया जा सकता है। एक शोध से तो यह बात भी सामने आई है कि नारियल के रेशे कार्बन और सल्फर के ऑक्साइड्स का अवशोषण कर हवा को शुद्ध बना सकते हैं। आज कल तो कॉयर का प्रयोग एक बेहतर प्राकृतिक बायो कम्पोस्ट के रूप में भी हो रहा है, जिससे मृदा की उर्वरता तो बढ़ती ही है, साथ ही उसकी गुणवत्ता भी बनी रहती है। इस तरह रासायनिक खाद के बरक्स कॉयर एक जैविक खाद का विकल्प प्रस्तुत करता है।

सबसे बढ़कर कागज उद्योग में लकड़ी का यह एक अच्छा स्थानापन्न (Substitute) साबित हो सकता है और इस तरह वनों की कटाई से होने वाले पर्यावरणीय नुकसान की भरपाई कर सकता है।

(शब्द संख्या-541)

Source: कुरुक्षेत्र

18. उपरोक्त गद्यांश के संदर्भ में सत्य कथन को पहचानिये।

(a) नायलॉन व पॉलिस्टर की भाँति कॉयर भी एक जैव-अनिम्नीकारक पदार्थ है।

(b) कॉयर ताप का एक बेहतर प्रतिरोधक तो है, किंतु ध्वनि का बेहतर अवशोषक नहीं।

(c) कॉयर के बहुविध अनुप्रयोग तो हो सकते हैं किंतु लागत की दृष्टि से यह अभी महँगी तकनीक है।

(d) एक पर्यावरण हितैषी उत्पादक होने के कारण कॉयर प्लास्टिक का एक अच्छा प्रतिस्थापक साबित हो सकता है।

19. उपरोक्त गद्यांश का मूल भाव क्या है?

(a) पर्यावरण हितैषी उत्पाद के रूप में कॉयर।

(b) आर्थिक दृष्टि से लाभकारी कॉयर।

(c) समस्यामूलक कचरे के रूप में कॉयर।

(d) प्राकृतिक बायो कम्पोस्ट के रूप में कॉयर।

गद्यांश-17 (अर्थव्यवस्था)

- हर राष्ट्र की कुछ विशिष्ट जनांकिकी तथा आर्थिक विशेषताएँ होती हैं, जिसका समुचित प्रबंधन कर ही वो सही अर्थों में विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। कहीं धन का आधिक्य होता है तो श्रमबल की कमी होती है, तो कहीं श्रमिकों की अधिकता होती है, किंतु अपेक्षित पूंजी का अभाव होता है। इसलिये विकास की नीति भी इसी अनुरूप बन जाती है। ऐतिहासिक उदाहरण लें तो जहाँ इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति पूंजीपतियों के सहारे संपन्न हुई तो रूस में इसके लिये राजकीय सहायता की जरूरत पड़ी, क्योंकि वहाँ व्यक्तिगत स्तर पर बड़े पूंजीपतियों का अभाव था तो वहीं जापान में यह पूंजीपति तथा सरकार दोनों के सहयोग से संपन्न हुआ।

(शब्द संख्या-144)

Source: स्वयं

20. उपर्युक्त परिच्छेद का निहितार्थ क्या है?

(a) औद्योगीकरण के बिना विकास संभव नहीं है।

(b) स्थानीयता नीति निर्माण का अनिवार्य तत्त्व है।

(c) विकास के विदेशी मॉडल को अपनाना अनुचित है।

(d) भारत श्रमाधिक्य वाला देश है।

गद्यांश-18 (पर्यावरण)

- वैकल्पिक विकास के मॉडल की बात करना आज उसी तरह अर्थहीन है, जैसे कभी यूटोपिया की बात करना समाजवादी आंदोलन के प्रारंभिक काल में था। कोई भी व्यवस्था सामने की हकीकत के संदर्भ में ही बनती है, बनी-बनाई कल्पना के अनुरूप नहीं। ऐसे किसी भी मनचाही ब्लूप्रिंट को लागू करने का प्रयास या तो धर्माधता को जन्म देता है या तानाशाही को। आज चूँकि पर्यावरण का संकट विविध रूपों में हमारे अस्तित्व के लिये सर्वाधिक महत्त्व का बन गया है, इसलिये हमें समाज निर्माण की वैसी दिशा अपनानी होगी जो पर्यावरण के लिये कम-से-कम नुकसानदेह हो । अगर ऐसे परिवर्तन हमारे बूते के बाहर दिखें तो हम स्वयं सामाजिक जीवन को बदली स्थिति के अनुकूल ढालें। यह बुनियादी बात ध्यान में रखनी ज़रूरी है।

- शोषणमुक्त समाज में पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने की क्षमता गैर-बराबर समाज से अधिक होती है क्योंकि गैर-बराबरी से ही दिखावे के लिये बेज़रूरत तामझाम पर खर्च ज़रूरी होता है, और बाजार आश्रित पूंजीवादी समाज में तो बेज़रूरी वस्तुओं के उत्पादन व उपभोग की भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण है कि इसे नियंत्रित करने से पूंजीवादी व्यवस्था ध्वस्त हो सकती है।

(शब्द संख्या-183)

Source: विकास का वैकल्पिक मॉडल : सच्चिदानंद सिन्हा

21. इस परिच्छेद द्वारा दिया गया सर्वाधिक तर्कसंगत और निर्णायक संदेश कौन-सा है?

(a) वर्तमान विकास का मॉडल अनुपयोगी है।

(b) आर्थिक विकास और पर्यावरण रक्षा साथ-साथ नहीं चल सकते।

(c) आवश्यकता के अनुरूप उपभोग ही टिकाऊ व्यवस्था है।

(d) पर्यावरण रक्षा में समाज की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण है।

गद्यांश-19 (साहित्य)

- रूढ़ि की रूढ़िग्रस्त परिभाषा हमें छोड़नी होगी, हमें उदार दृष्टिकोण से उसका नया और विशालतर अर्थ लेना होगा। हमें सबसे पहले यह समझना होगा कि रूढ़ि अथवा परंपरा कोई बनी-बनाई चीज नहीं हैं, जिसे साहित्यकार ज्यों-का-त्यों पा या छोड़ सकता है, मिट्टी के लोंदे की तरह अपना या फेंक सकता है। हमें यह किंचित् विस्मयकारी तथ्य स्वीकार करना होगा कि परंपरा स्वयं लेखक पर हावी नहीं होती बल्कि लेखक चाहे तो परिश्रम से उसे प्राप्त कर सकता है, लेखक की साधना से ही रूढ़ि बनती और मिलती है। साहित्यकार के लिये आवश्यक है कि साहित्यिक में और जीवन में 'आसीत्' का और 'अस्ति' का, जो 'अचिर' हो गया है उसका और जो 'चिर' है उसका, और इन दोनों की परस्परता अन्योन्याश्रिता का ज्ञान उसमें बना रहे।

(शब्द संख्या-129)

Source: रूढ़ि और मौलिकता : अज्ञेय

22. इस परिच्छेद से निकलने वाला मूलभाव क्या है?

(a) रूढ़ि अनिवार्यतः त्याज्य नहीं होती।

(b) रूढ़ि समृद्ध परंपरा का द्योतक है।

(c) रूढ़ि को ग्रहण करने हेतु भी उचित पात्र चाहिये।

(d) रूढ़ि को अपनाना आसान है।

गद्यांश-20 (मनोविज्ञान)

❖ किसी चीज़, आचरण, व्यवहार या किसी कृति को अच्छा-बुरा सराहने लायक या उपेक्षणीय मानने के पीछे आमतौर पर एकदम निजी पसंद या नापसंद की भूमिका होती है। रुचि का प्रश्न मुख्य तौर पर आत्मनिष्ठ समझा जाता है, लेकिन अपनी पसंद व्यक्त करते समय हम यह उपेक्षा रखते हैं कि दूसरे भी हमारी इस परख में सहभागी हों। इस तरह हम अपनी आत्मनिष्ठता को वस्तुनिष्ठता में बदलना चाहते हैं। किसी फैशन को अपनाना अभिरुचि का ही एक हिस्सा है। फैशन के ज़रिये दैनांदिन जीवन में साधारण लोग वह हासिल कर सकते हैं, जिसे कांट ने अभिरुचि का अंतर्विरोध करार दिया था। फैशन एक साथ किसी एक क्षण में सामाजिक रूप से स्वीकार्य शैलीगत प्राथमिकता की अभिव्यक्ति होने के साथ-साथ एक निजी वक्तव्य भी है। चूँकि वह नकल होने के साथ अपनी विशिष्टता का बयान भी है, इसलिये वह इस अंतर्विरोध को सफलतापूर्वक व्यक्त कर पाता है।

(शब्द संख्या-145)

Source: समाज विज्ञान विश्वकोश

23. इस परिच्छेद से निम्नलिखित में से कौन-सा/से सही निष्कर्ष निकाला जा सकता है/निकाले जा सकते हैं?

1. रुचि का निर्माण नितांत वैयक्तिक मसला है।
2. किसी फैशन को अपनाना सामुदायिक पहचान को दर्शाता है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये-

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

गद्यांश-21 (राजनीतिक सिद्धांत)

- रेनेसाँ ऐसा कोई सार्वभौम विचार नहीं है, जिसे आसानी से ग्रहण किया जा सके। यह 1776 में अमेरिका को स्वतंत्रता मिलने के बाद अस्तित्व में आया। चीनी लोगों का विश्वास है कि रेनेसाँ चींग राजवंश के काल में हुआ, जब वहाँ मई की चौथी क्रांति हुई। जापान में रेनेसाँ मैजी के समय शुरू हुआ। दरअसल, यह मात्र नामकरण की समस्या नहीं है। यह राष्ट्रीय या क्षेत्रीय विचारों पर निर्भर करता है। अलग-अलग जातियों और सभ्यता से संबंधित होने के कारण लोगों ने इसको विभिन्न नामों से अभिहित किया। मेरा विश्वास है कि संपूर्ण समस्या का संबंध इसके प्रत्यक्ष होने से है। उन्नीसवीं शताब्दी के भारत में जो हुआ, यदि यह जागरण है तो वह क्या है, जो कबीर और नामदेव के समय हुआ था? इटली की तरह उसी समय स्पष्ट रूप से हमारे देश में भी जागृति फैली।

(शब्द संख्या-139)

Source: उन्नीसवीं सदी का भारतीय पुनर्जागरण: यथार्थ या मिथक : नामवर सिंह

24. निम्नलिखित में कौन सा सबसे सर्वाधिक तार्किक और सारभूत संदेश है, जो उपर्युक्त परिच्छेद द्वारा व्यक्त किया गया है?

(a) रेनेसाँ हर समाज में अनिवार्य रूप से घटित हुआ है।
(b) हर परिघटना विशिष्ट परिस्थितियों में संपन्न होती है।
(c) भारतीय रेनेसाँ 15वीं सदी में संपन्न हुआ।
(d) कबीर दास भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत हैं।

गद्यांश-22 (दर्शन)

- महा-आख्यान के खिलाफ एक भीतरी बगावत करने का एक उपक्रम प्रति-आख्यान के रूप में सामने आया है। महा-आख्यान जब सांस्कृतिक या वैचारिक दायरे से निकलकर राजनीतिक और सामाजिक संरचनाओं का आधार बनने लगता है तो उसके आधार को संस्कृति के जगत में विचलित करने के लिये प्रति-आख्यानों की रचना की जाती है। राष्ट्रवाद एक ऐसा ही महा-आख्यान है, जो छोटी-छोटी पहचानों की दावेदारी को दबा देता है। उप-राष्ट्रीयताओं के संघर्ष, उपेक्षित भाषाओं और संस्कृतियों का केंद्र बनती हैं। प्रति-आख्यानों के ज़रिये महा-आख्यानों के प्रच्छन्न पक्षपात, अपर्याप्तता और अस्थायित्व को रेखांकित करके उनके आधारभूत सत्ता-संबंधों को स्पष्ट किया जा सकता है।

(शब्द संख्या-100)

Source: समाज विज्ञान विश्वकोश

गद्यांश-23 (मनोविज्ञान)

❖ अभिरुचि के मानक हमेशा ऊपर से नीचे की तरफ रिस-रिस कर पहुँचते हैं। इसे 'ट्रिकलडाउन इफेक्ट' कहा जाता है। चाहे रहन-सहन की कोई शैली हो, खान-पान हो या फैशन; सबसे पहले उसका चलन समाज की ऊपरी परतों में होता है। इस धारणा के दो मतलब हैं और दोनों एक-दूसरे के विपरीत हैं। पहला, निचले तबके ऊपरी तबकों के स्टाइल की नकल करते हैं और उनकी कोई अलग विशिष्ट अभिरुचि नहीं होती। जब तक उच्च वर्गों का फैशन निचले वर्गों तक आ पाता है, तब तक उच्च वर्ग किसी और फैशन को अपना लेते हैं। दूसरा, बावजूद इसके कि अभिरुचि का सफर ऊपर से नीचे होता है और ऊपर व नीचे के बीच समय का अंतराल भी दिखता है, पर कुल मिला कर यह तथ्य ऊपरी परत और निचली परत की अभिरुचियों के एक समान होने का प्रमाण भी है। सामाजिक अनुकरण की यह प्रक्रिया एक तो मांग पर आधारित होती है, दूसरे ऊर्ध्वगामिता की इच्छा भी इसकी चालक शक्ति के तौर पर काम करती है।

(शब्द संख्या-165)

Source: समाज विज्ञान विश्वकोश

26. उपर्युक्त परिच्छेद का निहितार्थ क्या है?

(a) अभिरुचियों में स्तरीकरण नहीं होता है।
(b) अभिजात्यों की अभिरुचि श्रेष्ठ होती है।
(c) वर्ग अंतराल का अभिरुचि निर्माण से प्रत्यक्ष संबंध है।
(d) अभिरुचि नीचे से ऊपर की ओर भी जा सकती है।

गद्यांश-24 (समाज)

- गांधी की अपनी ज्ञानमीमांसा में नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी गई थी और इस लिहाज से वो मानते थे कि बुनियादी के बावजूद दूसरों के साथ संवाद और समर्थन का रिश्ता रखना चाहिये। अंबेडकर का तर्क था कि विपक्षी के साथ संवाद कायम रखना तो ठीक है पर संवाद की शर्तें तय करने में पिछले अनुभव ऐतिहासिक और भौतिक आयामों का ख्याल रखना होगा। यह भी देखना पड़ेगा कि विपक्षी आपको समान हैसियत देता है या नहीं। दूसरे, नैतिक मूल्यों की आड़ में पक्षपात भी किया जा सकता है। अंबेडकर का आरोप था कि गांधी खुद भी इस समस्या के शिकार हैं। गांधी श्रुति, स्मृति, आचार और सद्विप्र के पारंपरिक तरीकों में केवल चौथे के आधार पर समझ बनाने के पक्ष में थे। पर अंबेडकर का प्रश्न था कि आखिर अंत:करण के पवित्रता की गारंटी कैसे दी जाएगी?

(शब्द संख्या-139)

Source: समाज विज्ञान विश्वकोश

27. उपरोक्त परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-

1. अंबेडकर विपक्षियों से संवाद के पक्षधर नहीं थे।
2. गांधी अंत:करण की पवित्रता को सर्वाधिक बल देते थे।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1

(c) 1 तथा 2 दोनों

(b) केवल 2

(d) न तो 1 और न ही 2

गद्यांश-25 (शिक्षा)

- गरीब तथा दलित बच्चों को धनी घरानों के बच्चों के साथ पढ़ाने के कुछ मनौवैज्ञानिक और राजनीतिक परिणाम होंगे। वर्तमान में देश के अधिकांश पब्लिक स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी है। इन स्कूलों में बच्चों को पढ़ाने के लिये आर्थिक दृष्टि से समर्थ माँ-बाप समाज के उस दायरे में रहते हैं, जिसे अंग्रेज़ी ने बाँधा है। उनके जीवन और व्यक्तित्व को अंग्रेज़ी ने सजाया है और इस साज-सज्जा में देशी भाषा व आचार-विचार नितांत निचला स्थान ही पा सकते हैं। अंग्रेज़ी वह चर्बी है, जो इस वर्ग के वैचारिक खोखलेपन को ढाँपती है। इस वर्ग के बच्चों के साथ थोड़े-से दलितों और जनजातियों के बच्चों का साहचर्य इन दूसरे बच्चों में अत्यंत विषम मनःस्थितियों को जन्म देगा। भाषा के संकट से आरंभ होकर आर्थिक दूरी पर निर्भर स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, मानसिक क्रियाशीलता आदि सभी में ऐसी खलबली मचेगी जिसमें गरीब बच्चों का व्यक्तित्व पूरी तरह डगमगा जाएगा।

- सँभलने का एकमात्र साधन उसके पास यह शेष रहेगा कि वह अपने बहुसंख्यक सहपाठियों की जीवन-रीति को आदर्श मानकर अपना ले। यह साधन उसके अस्तित्व को तात्कालिक सुरक्षा भले ही प्रदान कर दे, किंतु इसे पाने के लिये उसे अपने संपूर्ण अहं, मनोबल और आत्मविश्वास की बलि देनी होगी।

(शब्द संख्या-196)

Source: राज, समाज और शिक्षा: कृष्ण कुमार

28. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में कौन-सा सर्वाधिक तर्कसंगत निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(a) अंग्रेज़ी भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर हावी है।

(b) अलग-अलग पृष्ठभूमि के बच्चों को एक साथ पढ़ाना खतरनाक है।

(c) पिछड़ी पृष्ठभूमि के बच्चों का पब्लिक स्कूलों में असंगत विकास होता है।

(d) प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में ही देनी चाहिये।

29. अंग्रेज़ी भाषा को लेकर उपरोक्त परिच्छेद की क्या धारणा है?

(a) यह मात्र एक माध्यम है।

(b) यह एक वर्ग है।

(c) यह शोषण का उपकरण है।

(d) यह त्याज्य है।

गद्यांश-26 (शिक्षा)

- शिक्षा को प्रतियोगिता का आधार बनाने के लिये प्रमाणपत्र की व्यवस्था की गई ओर संपूर्ण शिक्षा को एक क्रमबद्ध तैयारी का रूप दिया गया। कक्षा और प्रमाणपत्र की व्यवस्था का सीधा प्रभाव शिक्षा को जीवन तथा आय के उत्पादन से काट देना हुआ। अनपढ़ समाज के जो बच्चे शिक्षा के रास्ते पर आगे बढ़े, उन्हें अपने पैतृक उद्यम तथा उत्पादक परिवेश से कटकर कक्षाओं की बाधा-दौड़ कबूल करनी पड़ी, लेकिन कबूल करने मात्र से वे इस दौड़ में उन प्रतियोगियों की बराबरी नहीं कर सकते थे, जिन्हें शिक्षा विरासत में मिली थी। नवागत प्रतियोगियों को पहुँच बहुत सीमित रहनी स्वाभाविक थी।

- साधनों की सीमा और प्रतियोगिता के कठिनतर होते जाने से वे वहाँ तक नहीं पहुँच सकते थे, जहाँ पहुँचकर वे पूर्वाभियों के बराबर बैठ सकते। वे केवल स्थानीय या इकाई स्तर की ताकत वाले स्थानों तक पहुँच सके। उनकी विंडबना यह थी कि वे अपनी दुनिया से कट गए, लेकिन शिक्षितों के दायरे में बहुत भीतर नहीं पहुँच सके।

(शब्द संख्या-160)

Source: राज, समाज और शिक्षा: कृष्ण कुमार

30. निम्नलिखित में से कौन-सी सर्वाधिक तार्किक और तर्कसंगत पूर्वधारणा है, जो कि उपर्युक्त परिच्छेद से बनाई जा सकती है?

(a) शिक्षा व्यवस्था को प्रमाणपत्र रहित बनाने की आवश्यकता है।

(b) शिक्षा में प्रतियोगिता विद्यार्थियों को हतोत्साहित करती है।

(c) सामाजिक संदर्भ और उत्पादन प्रणाली से जुड़ी शिक्षा ही उपयोगी है।

(d) वर्तमान शिक्षा व्यवस्था से पिछड़ों को कोई लाभ नहीं मिला। दुनिया से कट गए, लेकिन शिक्षितों के दायरे में बहुत भीतर नहीं पहुँच सके।

(शब्द संख्या-160)

Source: राज, समाज और शिक्षा: कृष्ण कुमार

गद्यांश-27 (शिक्षा)

- अनुभव और पाठ का द्वंद्व वास्तव में दो दर्शनों का द्वंद्व है। अनुभव की गरिमा तभी स्वीकारी जा सकती है, जब व्यक्ति को गरिमा दी जाए। जिस समाज में व्यक्ति के लिये गरिमा क्या, करुणा की भी गुजांइश न हो, वहाँ अनुभव की स्वतंत्र सत्ता नहीं हो सकती। अनुभव का समूह से विरोध नहीं है, किंतु सामान्यत्व से है। जिस समाज में व्यक्ति के अनुभव को संदेह की निगाह से देखा जाता हो और आशा की जाती हो कि वह सर्वस्वीकृत अनुभवों या विधानों के धरातल पर ही जिएगा, वहाँ अनुभव को एक शैक्षिक मूल्य के रूप में मान्यता नहीं मिल सकती। ऐसे समाज में शिक्षा का जीवनयापन से संबंध स्थापित नहीं हो सकता, क्योंकि शिक्षा जीवन के स्थान पर सदियों से किये जा रहे अनुभवों के निचोड़-या सामान्य अनुभवों की सैद्धांतिक व्याख्या से संबंधित रहेगी। वह समाज के स्थापित मूल्यों का पोषण करती रहेगी और परिवर्तनकारी शक्तियों के साथ न हो सकेगी।

(शब्द संख्या-153)

31. इस परिच्छेद से निकलने वाला मूलभाव क्या है?

(a) प्रत्यक्ष का ज्ञान शिक्षा का अनिवार्य तत्त्व है।
(b) वर्तमान समाज अनुभव को महत्त्व नहीं देता।
(c) शिक्षा को जीवनयापन से जुड़ा होना चाहिये।
(d) सैद्धांतिक ज्ञान शिक्षा को गतिहीन बना रहा है।

गद्यांश-28 (इतिहास)

- पुनर्जागरण के बाद से यह तो स्पष्ट हो गया है कि परंपरा विरासत में अपने आप सहज ही प्राप्ति होनेवाली वस्तु नहीं है, बल्कि उसे आयास करके अर्जित करना पड़ता है। अर्जन के इस प्रयास में चयन अनिवार्य है। वस्तुतः यह चयन-वृत्ति स्वयं 'परंपरा' की अवधारणा में अंतर्निहित है। परंपरा यदि एक का दूसरे को और दूसरे का तीसरे को दिया जानेवाला पीढ़ी-दर-पीढ़ी क्रम है तो हस्तांतरण के इस क्रम में ज़रूरी नहीं कि अतीत की संपूर्ण निधि अविकल रूप में सारी की सारी सुलभ होती चली जाए। प्रायः हर मंजिल पर कुछ छूटता है, कुछ नया जुड़ता है और कुछ बदलता भी है। निश्चय ही इसमें व्याख्या की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है और ये व्याख्या भी क्रमशः मूल के साथ लगकर परंपरा का अभिन्न अंग बन जाती हैं। यहाँ तक कि कभी-कभी मूल और व्याख्या को अलगाना कठिन हो जाता है।

(शब्द संख्या-163)

Source: प्रासंगिकता का प्रमाद: नामवर सिंह

32. उपरोक्त परिच्छेद में लेखक किस बात पर सर्वाधिक ज़ोर डाल रहा है?

(a) परंपरा की अवधारणा पर

(b) परंपरा की ग्रहणशीलता पर

(c) परंपरा की भूमिका पर

(d) परंपरा की विशेषता पर

गद्यांश-29 (दर्शन)

- संस्कृत काव्यशास्त्र 'वासना' को आधार के रूप में प्रस्तुत करते हुए तादात्म्य के लिये उसे पर्याप्त नहीं मानता। इसका है- साधारणीकरण की व्यवस्था । तादात्म्य साधारणीकरण के द्वारा ही संभव होता है और कहने की आवश्यकता नहीं है कि साधारणीकरण स्वतः स्फूर्त नहीं है। यही नहीं, बल्कि उसके मार्ग में अनेक 'विघ्न' भी गिनाए गए हैं। उल्लेखनीय है कि इन विघ्नों में 'स्व-मताग्रह' की गणना नहीं है। किसी प्राचीन आचार्य ने यह नहीं कहा कि किसी कृति में मत-विशेष के आग्रह के कारण उसके साथ तादात्म्य में बाधा पड़ती है और न यही कहा कि स्वयं पाठक भी अपने मत के आग्रह के कारण किसी विभिन्न मत वाली कृति के साथ तन्मय नहीं हो सकता।

(शब्द संख्या-119)

Source: अज्ञेय

33. उपरोक्त परिच्छेद के अनुसार किसी कृति के साथ तादात्म्य स्थापित करने में कौन बाधा नहीं है?

(a) व्यक्तिगत मत

(b) साधारणीकरण

(c) वासना

(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

गद्यांश-30 (दर्शन)

- काल वर्तमानता के रूप में, एक नैरंतर्य अथवा सातत्य के बोध के रूप में हमारी अनुभूति की चीज है, लेकिन अनुभूति संप्रेष्य नहीं है। हम उसका वर्णन ही कर सकते हैं। काल की हम परिभाषा करते हैं और हमारी हर परिभाषा काल की अवधारणा के लिये देश अथवा दिक् के आयाम का उपयोग करती है। काल की हमारी हर परिभाषा दिक्-सापेक्ष होती है; जैसे कि हमारी दिक् की परिभाषाएँ भी प्रायः काल-सापेक्ष होती हैं। यह कठिनाई हमारे गोचर अनुभवों की सीमा की कठिनाई है, जो उन अनुभवों के वर्णन अथवा वृत्तांत में प्रतिबिंबित होती है। हमारे गोचर अनुभवों के संसार में दिक्काल के आयाम अलग नहीं किये जा सकते। सत्ता अथवा रिएलिटी का हमारा बोध एक दिक्काल-सातत्य में स्पेस-टाइम कंटिन्युअम में बनता है; दिक्काल के ताने-बाने से ही उसकी बनावट रची गई है।

(शब्द संख्या-130)

Source: स्मृति और देश: अज्ञेय

34. उपरोक्त परिच्छेद के अनुरूप निम्नांकित कथनों पर विचार करें-

1. काल की परिभाषा स्थान निरपेक्ष होती है।
2. सांसारिक अनुभव दिक् और काल से निरपेक्ष होती है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 तथा 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

गद्यांश-31 (राजनीति)

- संस्थागत संयम की सीमाओं के परे रहने से करिश्माई नेतृत्व को मनमानी करने की छूट तो मिलती है, पर दूसरी ओर वह अपने प्राधिकार को टिकाने के लिये आवश्यक संस्थाओं की सहकारी भूमिका से भी वंचित हो जाता है। इसी कारण नेतृत्व का बुनियादी चरित्र अस्थिरता और असुरक्षा का शिकार रहता है। चूँकि असाधारण और दैवी समझे जाने वाले गुणों का कोई वस्तुगत आधार नहीं ही सकता, इसलिये उनमें अनुयायियों की आस्था भी किसी सुचिंतित तर्क के अधीन न होकर भंगुर किस्म की होती है। ऐसे नेता को हमेशा अंदेशा सताता रहता है कि कहीं उसके अनुयायी उसके करिश्मे के सम्मोहन से बाहर न निकल जाएँ। इसी कारण एक अनदेखी प्रक्रिया भी चलती रहती है, जिसके तहत करिश्माई प्राधिकार को अपनी ओर आकर्षित रखने के लिये नए-नए रक्षात्मक पैंतरे अपनाता है, लेकिन इस रणनीतिक योजना के परिणाम उसके हाथ से बाहर होते हैं। इस चक्कर में कई बार करिश्माई नेतृत्व अपने ही हाथों से अपना खात्मा भी कर बैठता है।

(शब्द संख्या-129)

Source: समाज विज्ञान विश्वकोश

35. उपरोक्त परिच्छेद के अनुसार निम्नांकित कथनों पर विचार करें-

1. असाधारण गुण करिश्माई नेताओं को स्थायी अनुयायी से जोड़ते हैं।
2. करिश्माई नेतृत्व अपने ही हाथों समाप्त होता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 तथा 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

गद्यांश-32 (शिक्षा)

- तालीम का अर्थ क्या है? अगर उसका अर्थ सिर्फ अक्षरज्ञान ही हो तो वह तो एक साधन जैसी ही हुई। उसका अच्छा उपयोग भी हो सकता है और बुरा उपयोग भी हो सकता है। एक शस्त्र से चीर-फाड़ करके बीमार को अच्छा किया जा सकता है और वही शस्त्र किसी की जान लेने के लिये भी काम में लाया जा सकता है। अक्षर-ज्ञान का भी ऐसा ही है। बहुत से लोग उसका बुरा उपयोग करते हैं। यह तो हम देखते ही हैं। उसका अच्छा उपयोग प्रमाण में कम ही लोग करते हैं। यह बात अगर ठीक है तो उससे यह साबित होता है कि अक्षर-ज्ञान से दुनिया को फायदे के बदले नुकसान ही हुआ है।

(शब्द संख्या-115)

Source: हिंद स्वराज: महात्मा गाँधी

36. उपरोक्त परिच्छेद में से निम्नलिखित में कौन सा सर्वाधिक सारभूत संदेश व्यक्त होता है?

(a) शिक्षा एक साधन मात्र है

(b) शिक्षा से दुनिया को नुकसान पहुँचा है

(c) शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान नहीं है

(d) शिक्षा के फायदे सीमित हैं

गद्यांश-33 (दर्शन)

- मनुष्य की वृत्तियाँ चंचल हैं। उसका मन बेकार की दौड़-धूप किया करता है। उसका शरीर जैसे-जैसे ज्यादा देते जाएँ, वैसे-वैसे ज्यादा माँगता जाता है। ज़्यादा लेकर भी वह सुखी नहीं होता। भोग भोगने से भोग की इच्छा बढ़ती जाती है। इसलिये हमारे पुरखों ने भोग की हद बाँध दी। बहुत सोचकर उन्होंने देखा कि सुख-दुःख तो मन के कारण हैं। अमीर अपनी अमीरी की वजह से सुखी नहीं है, गरीब अपनी गरीबी के कारण दुखी नहीं है। अमीर दुखी देखने में आता है और गरीब सुखी देखने में आता है। करोड़ों लोग तो गरीब ही रहेंगे, ऐसा देखकर पूर्वजों ने भोग की वासना छुड़वाई। हजारों साल पहले जो हल काम में लिया जाता था, उससे हमने काम चलाया। हजारों साल पहले जैसे झोंपड़े थे, उन्हें हमने कायम रखा। हजारों साल पहले जैसी हमारी शिक्षा थी, वही चलती आई। हमने नाशकारक होड़ को जगह नहीं दी। सब अपना-अपना धंधा करते रहे।

- उसमें उन्होंने दस्तूर के मुताबिक दाम लिये। ऐसा नहीं था कि हमें यंत्र वगैरह की खोज करना ही नहीं आता था। लेकिन हमारे पूर्वजों ने देखा कि लोग अगर यंत्र वगैरह के झंझट में पड़ेंगे तो गुलाम ही बनेंगे और अपनी नीति को छोड़ देंगे। उन्होंने सोच-समझकर कहा कि हमें अपने हाथ-पैरों से जो काम हो सके, वही करना चाहिये। हाथ-पैरों का इस्तेमाल करने में ही सच्चा सुख है, उसी में तंदूरुस्ती है।

(शब्द संख्या-225)

Source: हिन्द स्वराज: महात्मा गाँधी

37. उपरोक्त परिच्छेद का निहितार्थ क्या है?

(a) आवश्यकता के अनुरूप ही उपभोग करना चाहिये
(b) अधिक खोज अधिक संकट लाता है
(c) पुरानी तकनीक ही अपनाने योग्य है
(d) प्राचीन सभ्यता ही श्रेष्ठ है

गद्यांश-34 (दर्शन)

- जो हमें पानी पिलाए, उसे हम अच्छा भोजन कराएँ। जो हमारे सामने सिर नवाए, उसे हम उमंग से दंडवत् प्रणाम करें। जो हमारे लिये एक पैसा खर्च करे, उसका हम मुहरों की कीमत का काम कर दें। जो हमारे प्राण बचाए, उसका दुख दूर करने के लिये हम अपने प्राणों को निछावर कर दें। जो हमारा उपकार करे, उसका हमें मन, वचन और कर्म से दस गुना उपकार करना चाहिये, लेकिन जग में सच्चा और सार्थक जीना उसी का है, जो अपकार करने वाले के प्रति भी उपकार करता है।

(शब्द संख्या-91)

Source: छप्पय

38. उपरोक्त परिच्छेद का लेखक लोगों को क्या संदेश देने की कोशिश कर रहा है?

(a) लोगों को सम्मान देना
(b) सद्भावनापूर्ण जीवन जीना
(c) बुराई से दूर रहना
(d) विनम्र होना

गद्यांश-35 (राजनीति)

- मार्क्स यह दावा करने की स्थिति में शायद ही थे कि उत्पादन के साधनों के त्वरित विकास के लिये पूंजीवाद की तुलना में समाजवाद श्रेष्ठ है। यह दावा उस दौर का है जब दोनों विश्व युद्धों के बीच के वर्षों में पूंजीवाद का मुकाबला सोवियत संघ की पंचवर्षीय योजनाओं से हुआ। वास्तव में मार्क्सवाद का दावा यह नहीं था कि उत्पादन के साधनों की पूरी क्षमता को विकसित करने में पूंजीवाद अपनी अंतिम सीमा तक पहुँच गया है। उसका मानना यह था कि पूँजीवादी विकास की अनवरुद्ध लय समय-समय पर अति उत्पादन का संकट पैदा करती रहती है, जो देर-सबेर अर्थव्यवस्था के संचालन से मेल नहीं खाता और यह अति उत्पादन ऐसे सामाजिक संघर्षों को जन्म देता है, जिनसे यह उबर नहीं सकता। अपने स्वभाव के चलते ही पूंजीवाद सामाजिक उत्पादन के बाद की अर्थव्यवस्था को अनुशासित कर सकने में अक्षम होता है।

(शब्द संख्या-141)

Source: मार्क्स और आज का समय: एरिक हॉब्सबोम

39. पूंजीवाद के बारे में लेखक की धारणा क्या है?

(a) पूंजीवाद विषमता उत्पन्न करता है
(b) पूंजीवाद का अंत निकट है
(c) पूंजीवाद संघर्ष को बढ़ाता है
(d) पूंजीवाद समाजवाद से बेहतर है

गद्यांश-36 (दर्शन)

- जीवन के सुख-दुख का प्रतिबिंब मनुष्य के मुखड़े पर सदैव तैरता रहता है, लेकिन उसे ढूँढ़ निकालने की दृष्टि केवल चित्रकार के पास होती है। वह भी एक चित्रकार था। भावना और वास्तविकता का एक अद्‌भुत सामंजस्य होता था उसके बनाए चित्रों में। एक बार उसके मन में आया कि ईसा मसीह का चित्र बनाया जाए। सोचते-सोचते एक नया प्रसंग उभर आया। उसके मस्तिष्क में छोटे-से ईसा को एक शैतान हंटर से मार रहा है, लेकिन न जाने क्यों ईसा का चित्र बन ही नहीं रहा था। चित्रकार की आँखों में ईसा की जो मूर्ति बनी थी, उसका मानव रूप में दर्शन दुर्लभ था। बहुत खोजा, मगर वैसा तेजस्वी मुखड़ा उसे कहीं नहीं मिला।

(शब्द संख्या-115)

Source: कैदी: ओ हेनरी

40. उपरोक्त परिच्छेद का निहितार्थ क्या है?

(a) ईश्वर का चित्रण कठिन है

(b) मानव का स्वरूप ईश्वरीय नहीं रह गया है

(c) मानव ओजस्वी नहीं रहा

(d) आदर्श की खोज कठिन है

गद्यांश-37 (समाज)

- ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो अस्पृश्यों की दयनीय स्थिति से दुखी हो यह चिल्ला कर अपना जी हल्का करते फिरते हैं कि 'हमें अस्पृश्यों के लिये कुछ करना चाहिये।' लेकिन इस समस्या को जो लोग हल करना चाहते हैं, उनमें से शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो यह कहता हो कि 'हमें स्पृश्य हिंदुओं को बदलने के लिये भी कुछ करना चाहिये।' यह धारणा बनी हुई है कि अगर किसी का सुधार होना है तो वह अस्पृश्यों का ही होना है। अगर कुछ किया जाना है तो वह अस्पृश्यों के प्रति किया जाना है और अगर अस्पृश्यों को सुधार दिया जाए तब अस्पृश्यता की भावना मिट जाएगी। सवर्णों के बारे में कुछ भी नहीं किया जाना है। उनकी भावनाएँ, आचार-विचार और आदर्श उच्च हैं। वे पूर्ण हैं, उनमें कहीं भी कोई खोट नहीं है।

- क्या यह धारणा उचित है? यह धारणा उचित हो या अनुचित, लेकिन हिंदू इसमें कोई परिवर्तन नहीं चाहते। उन्हें इस धारणा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि वे इस बात से आश्वस्त हैं कि वे अस्पृश्यों की समस्या के लिये बिल्कुल भी उत्तरदायी नहीं हैं।

(शब्द संख्या-143)

Source: अस्पृश्यता-उसका स्रोत: भीमराव अंबेडकर

41. उपरोक्त परिच्छेद में लेखक किस प्रवृत्ति की ओर इशारा कर रहा है?

(a) मूल समस्या को पहचान पाने की विफलता
(b) सही को गलत कहने की मानसिकता
(c) अस्पृश्यता को वैध मानने की मानसिकता
(d) उपरोक्त में से कोई नहीं

गद्यांश-38 (राजनीति)

- पूंजीवाद के प्रसार ने छोटे पैमाने के उद्योग-व्यापार को छिन्न-भिन्न कर दिया। बैंकों के पास अथाह पूंजी हो गई और वे भी इस पूंजी को प्रत्यक्ष रूप से उद्योग-व्यवसाय में लगाने लगे। बड़े-बड़े व्यवसायियों ने छोटे दुकानदारों पर धावा बोल दिया और उनके व्यापार को खत्म कर दिया। व्यवसायियों के बड़े-बड़े समुदाय बन गए और इनका मुकाबला करना असंभव हो गया। पूंजीवाद के विकास का यही प्रकार है। आर्थिक क्षेत्र में जब यह व्यवस्था उत्पन्न हो गई तब इसका प्रभाव सामाजिक जीवन पर पड़ने लगा। जिस समाज में धन का सबसे अधिक महत्त्व हो, उस समाज में आर्थिक पद्धति सामाजिक जीवन के सब आकारों को प्रभावित करने लगती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति का महत्त्व केवल आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि समस्त जीवन में बँट गया। व्यक्ति एक बड़ी मशीन का कल-पुरजा-मात्र रह गया और बृहत् समुदाय की तुलना में तुच्छ और नगण्य हो गया।

(शब्द संख्या-145)

Source: समष्टि और व्यक्ति: आचार्य नरेंद्र देव

42. उपरोक्त परिच्छेद के अनुसार पूंजीवाद से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

1. पूंजीवाद ने सामाजिक संरचना में परिवर्तन किया
2. पूंजीवाद से समुदाय का महत्त्व बढ़ा

उपरोक्त में कौन सा/से कथन सही है। हैं

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 तथा 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

गद्यांश-39 (समाज)

- जब कोई लड़की चूड़ियों के रंग और डिज़ाइन की विविधता देखती है, दुकान में रखी चूड़ियों की विपुल राशि में से अपने लिये चूड़ियाँ चुनती है, उन्हें पहनने के लिये अपने हाथ दुकानदार के हाथों के सामने पेश करती है तो वह संस्कृति के एक लंबे एजेंडा की तामील कर रही होती है। जैसे एक पत्थर किसी इमारत की दीवार में लगाए जाने से पहले अपनी ज़मीन से हुमसाया जाता है, लोहे के मज़बूत औजारों से तोड़ा और तराशा जाता है, कुछ वही हाल बचपन और किशोर वय में लड़की का होता है। लोहे के औजार उस पत्थर के लिये हथियार हैं, जिसे दीवार में लगाया जाना है। संस्कृति की दीवार में लड़की को जमाया जाना भी लोहे जैसी निर्मम कठोरता की मांग करता है। इसके पहले कि लड़की परिवार और जाति की सुदृढ़ इमारत की मज़बूती का माध्यम बन सके, उसे तोड़ा और तराशा जाना आवश्यक है। उसकी बाल्योचित स्वच्छंदता पर उतना ही निर्णायक प्रहार किया जाना जरूरी है, जितना उसकी मानवोचित स्वाधीनता पर ।

(शब्द संख्या-165)

Source: लड़की की पुनर्रचना: कृष्ण कुमार

43. उपरोक्त परिच्छेद में से निम्नलिखित में कौन सा सर्वाधिक सारभूत संदेश व्यक्त होता है?

(a) लड़कियों को श्रृंगार करना पसंद होता है।

(b) लड़कियों को भेदभाव भरा जीवन जीना पड़ता है।

(c) स्त्रीकरण एक वृहद् सांस्कृतिक परियोजना का हिस्सा है।

(d) समाज स्त्री स्वाधीनता को बाधित करता है।

गद्यांश-40 (साहित्य)

- सौंदर्य की परख की यह विकृति राजनैतिक प्रभाव के कारण आई है। गोरी चमड़ी के यूरोपियन लोग सारी दुनिया पर तीन सदियों से हावी रहे हैं। अधिकांश भागों को उन्होंने जीता और वहाँ अपना शासन कायम किया। वैसे भी उनके पास शक्ति और समृद्धि रही, जो रंगीन जातियों के पास नहीं रही। अगर अफ्रीका की नीग्रो जाति ने गोरे यूरोपियनों की तरह दुनिया पर शासन किया होता तो स्त्रियों की सुंदरता की कसौटी निश्चय ही अलग होती। कवियों और निबंधकारों ने नीग्रो त्वचा की मुलायम चिकनाहट तथा उसके आनंददायक स्पर्श एवं दर्शन का वर्णन किया होता; उनकी सौंदर्य-कल्पना में खूबसूरत होंठ या सीधी नाक पूर्णता की विशेषताएँ होतीं। सौंदर्यशास्त्र राजनीति से प्रभावित होता है; शक्ति सुंदर दिखाई देती है, विशेषकर गैर-बराबर शक्ति।

(शब्द संख्या-122)

Source: सुंदरता और त्वचा का रंग: राम मनोहर लोहिया

44. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में कौन सा सर्वाधिक तर्कसंगत और तार्किक निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(a) काली त्वचा अधिक सुंदर होती है।

(b) शक्ति से सौंदर्य के मानक निर्धारित होते हैं।

(c) रंगभेद का केवल राजनीतिक निहितार्थ है।

(d) रंगभेद की शुरुआत पश्चिम से हुई।

गद्यांश-41 (दर्शन)

- कुछ जिज्ञासाएँ अभी तक अनुत्तरित हैं। विज्ञान, दर्शन, समाजशास्त्र सभी ईमानदारी से स्वीकार करते हैं, उन विषयों पर अपनी सीमाओं को । संपूर्ण विश्व ब्रह्मांड निस्सीम है। उत्पत्ति, समय काल, सभी धुंध में या उस से भी परे। ज्ञान के जितने भी साधन या वाहक हैं, सिर्फ आँखें मिचमिचाकर रह जाते हैं। ज्ञान का साहस, दंभ, पांखड कुछ भी नहीं चलता। विवशता भी नहीं है, साधनहीनता भी नहीं। सिर्फ स्वीकारोक्ति है कि हम नहीं जानते, अभी तक नहीं जानते। ऐसे में एक मानव इस विश्व में अपने स्थान, अपनी अल्पकालता, अपनी क्षणभंगुरता के प्रति प्रश्नकुलता से आगे नहीं जाता। एक तटस्थता, अहंकारहीनता और निर्मम उत्सुकता ही मनुष्य को संवेदित और प्रबुद्ध रखती है। यही है धर्म का वह वैज्ञानिक अध्यात्म पक्ष, जहाँ ईश्वर, अनीश्वर की स्थिति स्थगित रहती है। इसके बाद दर्शन और व्याख्या शुरू होती है। रहस्य का भेद खोलने की कोशिशें होती हैं।

- ईमानदार दर्शन की प्रारंभिक स्थिति, जो बहुत शुद्ध और लंबी जिज्ञासा से प्रेरित होती है। ईश्वर का जन्म भी इसी स्थिति में होता है। इसी रास्ते पर थोड़ा आगे अध्यात्म का एक भिन्न रूप शुरू होता है। आत्मा, परमात्मा और विलय के सिद्धांत और प्राप्ति के साधन।

(शब्द संख्या-190)

Source: कृष्ण किशोर

45. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

1. कुछ जिज्ञासाएं हमेशा अनुत्तरित रह जाएंगी।
2. ईश्वर और अध्यात्म एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन असत्य है/हैं

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) न तो 1 न ही 2

(d) 1 और 2 दोनों

गद्यांश-42 (दर्शन)

- जगत् संबंधी प्रश्नों को हल करने के लिये अनुभव और चिंतन, ये दो ही मार्ग हैं। हर्ष का विषय है कि ये दोनों अब समान रूप से स्वीकृत हो चले हैं। दार्शनिक चिंतन करने वाले अब समझने लगे हैं कि कोरे चिंतन से जैसा कि प्लेटो और हेगल ने एक अपने भावात्मक दर्शनों में किया है, सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता। इसी प्रकार वैज्ञानिक भी अब यह जान गए हैं कि केवल प्रत्यक्षानुभव, जिसके आधार पर बेकन और मिल ने अपना प्रत्यक्षवाद स्थापित किया था, पूर्ण तत्त्वज्ञान के लिये काफी नहीं है। सत्यज्ञान की प्राप्ति इंद्रिय और अंतःकरण दोनों की क्रियाओं के योग से हो सकती है, पर अभी कुछ ऐसे दार्शनिक भी हैं, जो बैठे-बैठे अपने भावमय जगत् की रचना किया करते हैं और अनुभवात्मक विज्ञान का इसलिये तिरस्कार करते हैं कि उन्हें संसार का यथार्थ बोध नहीं होता। इसी प्रकार कुछ वैज्ञानिक ऐसे भी हैं, जो कहते हैं कि विज्ञान का परम लक्ष्य भिन्न-भिन्न व्यापारों का अन्वेषण मात्र है, दर्शन का जमाना अब गया, इस प्रकार के एकांगदर्शी विचार परम भ्रमात्मक हैं।

(शब्द संख्या-179)

Source: विश्वप्रपंच: रामचंद्र शुक्ल

46. उपर्युक्त परिच्छेद का निहितार्थ क्या है?

(a) प्लेटो और हेगल का चिंतन सत्य से दूर है
(b) सत्य के अन्वेषण का कोई एकमात्र मार्ग नहीं है
(c) दर्शनशास्त्र के उपागम गत्यात्मक होते हैं
(d) यथार्थ का बोध ही सत्य है

गद्यांश-43 (पर्यावरण)

- पर्यावरणीय नारीवाद के अनुसार विकास के पश्चिमी मॉडल द्वारा प्रकृति का दोहन और पितृसत्ता द्वारा स्त्री का उत्पीड़न अनिवार्यतः अंतर्संबंधित परिघटनाएँ हैं। पर्यावरण का निरंतर होता क्षय और स्त्री की आधीनता का स्रोत पुरुष की मानसिकता में निहित है। पारिस्थितिकीय और नारीवादी परिप्रेक्ष्यों को जोड़ने वाले इस विचार का विकास सत्तर और अस्सी के दशकों में हुआ। कुछ सिद्धांतकार इसे नारीवाद की तीसरी लहर के दायरे में रख कर भी देखते हैं। इकोफेमिनिज्म का दावा है कि उत्पीड़न के सभी रूप एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। इसलिये उत्पीड़न की संरचनाओं को अलग-अलग नहीं बल्कि उनकी संपूर्णता में समझने की कोशिश करनी चाहिये। इकोफेमिनिज्म के अनुसार, पितृसत्ता अपना प्रभुत्व कायम करने के लिये 'बाइनरी अपोजीशन' या द्विभाजनों के विमर्श की स्थापना करती है।

- जन्नत-जहन्नुम, दिमाग-देह, मर्द-औरत, इनसान-जानवर, चेतना-तत्त्व, संस्कृति-प्रकृति, श्वेत-अश्वेत आदि द्विभाजनों में एक पक्ष बेहतर और दूसरा कमतर मान लिया गया है। इस ऊँच-नीच को न्योचित और स्वाभाविक करार देने के लिये कई तरह के धार्मिक और वैज्ञानिक तर्कों का सहारा लिया जाता है। इन द्विभाजनों के विचार धारात्मक प्रभाव का वर्णन करते हुए सिद्धांतकार कहते हैं कि जब तक सभी तरह के बाइनरी अपोजीशन निष्प्रभावी नहीं होते तब तक मनुष्यता 'अपने ही खिलाफ' बँटी रहेगी। नारीवादी विदुषियों ने प्राचीन मेसोपोटेमिया और यूनान की संस्कृतियों के साथ-साथ यहूदी धर्म और ईसाइयत के भीतर खोज-बीन करके कि किस तरह बुक ऑफ जेनेसिस से निकले कथा-वृतांतों में स्त्री (हव्वा) और गैर-मानवीय जीव (साँप) का राक्षसीकरण किया गया है। उनका दावा है कि पुराने यूरोप में जीवन का सम्मान करने वाली ऐसी संस्कृतियों का अस्तित्व था कि जो मातृसत्तात्मक भी होती थी और जिन पर भौतिकवादी पहलू बहुत हावी नहीं रहते थे, लेकिन आक्रमणकारी आर्यों ने धीरे-धीरे उन्हें नष्ट कर दिया।

- पर्यावरणीय नारीवाद को उसके अनूठे रुख के कारण सराहना के साथ-साथ नारीवादी क्षेत्रों में आलोचना का सामना भी करना पड़ा है।
- आलोचकों का कहना है कि स्त्री के प्रकृति के साथ अटूट रिश्ते को दिखाने के चक्कर में यह नारीवाद जैविक तात्त्विकतावाद में फँस गया है, जिसके कारण इसके तार्किक आयाम कमज़ोर हुए हैं। जैविक तात्त्विकतावाद के विरोधियों का कहना है कि स्त्री में स्त्रियोचित ही नहीं बल्कि पुरुषोचित गुण भी होते हैं, लेकिन पितृसत्ता अपने स्वार्थ में उनके स्त्रियोचित गुणों को ही प्रोत्साहित करती है। पर्यावरणीय नारीवाद एक मात्र स्त्री को ही अपने स्त्रियोचित गुणों के कारण पर्यावरण और पारिस्थितिकी का रक्षक करार देता है। दूसरा, वह स्त्री के प्रकृति के साथ अटूट रिश्ते को स्थापित करने की प्रक्रिया में स्त्री-मुक्ति के अन्य सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं की उपेक्षा कर देता है।

(शब्द संख्या-412)

47. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

1. पर्यावरणीय नारीवाद के अनुसार नारी और प्रकृति की समस्याएँ समान हैं, जिसके मूल में पितृसत्तात्मक मानसिकता है।

2. पितृसत्ता अपना प्रभुत्त्व स्थापित करने के लिये 'बाइनरी अपोजीशन' या द्विभाजनों का सहारा लेती है।

3. आलोचकों के अनुसार पर्यावरणीय नारीवाद 'जैविक तात्त्विकतावाद' में फँस गया है।

4. स्त्री के प्रकृति के साथ अटूट रिश्ते को स्थापित करने की प्रक्रिया में स्त्री-मुक्ति के अन्य सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं को साथ लेकर चलता है। निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन असत्य है हैं

(a) केवल 3

(c) 2 और 4 दोनों

(b) केवल 4

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

गद्यांश-44 (पर्यावरण)

- दर्शन की एक नवीन शाखा के रूप में पारिस्थितिकीय दर्शन (गहन पारिस्थितिकी) मानवेतर प्रजातियों, पारिस्थितिकीय तंत्र और प्राकृतिक प्रक्रियाओं पर बल देता है। गहन पारिस्थितिकी का सरोकार जैवमंडलीय समतावाद और विविधता जैसे सरोकारों से है। जैवमंडलीय समतावाद या बॉयोस्फेरिक इगेलिटेरियनिज़्म ही गहन पारिस्थितिकी का सैद्धांतिक स्रोत है। गहन पारिस्थितिकी-विचारक का सैद्धांतिक स्रोत है। जैवमंडलीय समतावाद के अनुसार मनुष्य के अलावा भी अन्य समस्त चराचर जगत को भी जीवन जीने और विकसित होने का अधिकार है। गहन पारिस्थितिकी के सिद्धांतकारों ने अपना दर्शन व्याख्यायित करने के लिये मुख्यतः आठ बिंदु गिनाए हैं- पहला, पृथ्वी पर मानव और मानवेतर जीवन का कल्याण एवं प्रस्फुटन/उन्नयन स्वयं में एक मूल्य है। इस मूल्य को मानवीय उद्देश्यों हेतु मानवेतर दुनिया की उपयोगिता से स्वतंत्र समझना होगा। दूसरा, जीवन-रूपों की समृद्धि और विविधता इन मूल्यों की अनुभूति में योगदान करती है।

यह समृद्धि तथा विविधता अपने आप में भी मूल्य है। तीसरा, मनुष्य को अपनी अनिवार्य आवश्यकताएँ पूरी करने के अलावा इस समृद्धि और विविधता को कम करने का कोई अधिकार नहीं है। चौथा, मानवीय जीवन और संस्कृति का पल्लवन इनसानी आबादी में काफी गिरावट की मांग करता है। इसी तरह मानवेतर जीवन का पल्लवन भी इनसानी आबादी घटने पर निर्भर है। पाँचवां, मानवेतर जगत में मानवीय हस्तक्षेप की मात्रा इतनी अधिक है कि उसके हालत बिगड़ते जा रहे हैं। छठा, नीतियाँ बदलने की जरूरत है, जिसमें आधारभूत आर्थिक, तकनीकी और विचारधारात्मक संरचनाएँ प्रभावित हो सकें।

इसके परिणामस्वरूप भविष्य की स्थिति आज की स्थिति से भिन्न होगी। सातवाँ, यह वैचारिक परिवर्तन लाना होगा कि जीवन की गुणवत्ता (अंतर्निहित मूल्यों की स्थिति के साथ) की प्रशंसा की जानी चाहिये, न कि जीने के महँगे और ऊँचे मानकों को बढ़ाने की।

आठवाँ, जो इन बिंदुओं से सहमत हैं, उनका दायित्व है कि वे आवश्यक परिवर्तन लागू करने हेतु प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रयास करें। गहन पारिस्थितिकी का दर्शन विकेंद्रीकरण का समर्थन करता है,औद्योगीकरण के वर्तमान स्वरूप की निंदा करता है और सर्वसत्तावाद की समाप्ति पर बल देता है। उनका बल मनुष्य केंद्रीयता की जगह पारिस्थितिकीय केंद्रीयता पर निर्भर है। उनका मानना है कि पर्यावरण/पारिस्थितिकी की समस्या का हल तब तक नहीं हो सकता है, जब तक प्रकृति को उपभोग-वस्तु मात्र माना जाता रहेगा।

पारिस्थितिकी को केंद्र बना कर ही इस समस्या का हल किया जा सकता है। यह दर्शन पारिस्थितिकीय विज्ञान की सहायता लेकर दिखाता है कि अंततः सभी चीजें आपस में अंत: संबंधित होती हैं। हालाँकि पारिस्थितिकी के बारे में यह भी कहा जाता है कि वह असामाजिक है और जनसंख्या के कम-से-कम होने पर तो बल देता है, मगर प्राकृतिक आपदाओं और महामारी जैसी परिघटनाओं पर मौन है।

(शब्द संख्या-419)

48. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. गहन पारिस्थितिकी के अनुसार परिस्थितिकी की समस्या का हल तभी हो सकता है, जब तक प्रकृति को उपभोग-वस्तु मात्र माना जाता रहेगा।

2. यह दर्शन केंद्रीकरण का समर्थन करता है।

निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

49. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में कौन सा सर्वाधिक तर्कसंगत और तार्किक निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(a) गहन पारिस्थितिकी के संस्थापक 'आर्ने नेस' के अनुसार हमें पर्यावरण या प्रकृति की रक्षा के लिये डेकार्ट, न्यूटन के चिंतन को छोड़कर गांधीजी के दर्शन पर चलना होगा।

(b) गहन पारिस्थितिकी जैवमंडलीय समतावाद और विविधता पर बल देता है।

(c) पारिस्थितिकी दर्शन मानव और प्रकृति को अलग-अलग देखता है क्योंकि सभी चीजें आपस में अंतर्संबंधित नहीं होती हैं।

(d) गहन पारिस्थितिकीय, पारिस्थितिकीय केंद्रीयता की जगह मानव केंद्रीयता को महत्त्व देता है।

गद्यांश-45 (पर्यावरण)

- पारिस्थितिकवाद प्राकृतिक संसाधनों के लगातार दोहन और पर्यावरण की बदहाली के कारण पैदा हुई स्थिति के विश्लेषण और उसे दुरुस्त करने के लिये राजनीतिक कार्रवाई पर जोर देता है। पारिस्थितिकवादियों (या पर्यावरणवादियों) की कोशिशों के कारण कई देशों में ग्रीन पार्टियों का उभार हुआ है और पर्यावरण से जुड़े मुद्दे राजनीतिक वाद-विवाद के केंद्र में आए हैं। इस बहस में इकोसेंट्रिज़्म (पारिस्थितिक-केंद्रवाद) और एंथ्रोपोसेंट्रिज़्म (मानवकेंद्रवाद) का मुद्दा भी प्रमुख रहा है।

- अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में हुई औद्योगिक और वैज्ञानिक क्रांतियों के कारण प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, शहरी विकास और पर्यावरणीय क्षय में बहुत बढ़ोतरी हुई। साठ के दशक से पहले राजनीतिक एजेंडे में पर्यावरण के प्रश्न को तुलनात्मक रूप में महत्त्व नहीं दिया जाता था, लेकिन आज यह मसला राजनीति के सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण, विवादित और अहम विषयों में से एक है। एंड्रू डॉबसन ने तर्क दिया है कि पारिस्थितिकवाद को एक विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा मानना चाहिये।

- एक विचारधारा के रूप में सामने आने के लिये पारिस्थितिकवाद में तीन बुनियादी विशेषताएँ होनी चाहिये- पहली, अवधारणाओं और मूल्यों का ऐसा समूह, जो वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था की समीक्षा पेश करे; दूसरी, किसी समाज की वैकल्पिक रूपरेखा; और तीसरी, वैकल्पिक रूपरेखा के अनुसार समाज को ढालने के लिये रणनीति और सामाजिक कार्यक्रम। डॉब्सन के अनुसार, पारिस्थितिकवाद इन तीनों ही कसौटियों पर कामयाब है। पहला, इसकी बुनियाद में यह विचार निहित है कि मनुष्यों और प्रकृति के बीच संबंधों पर नए सिरे से विचार होना चाहिये।

- यह इस बुनियादी तथ्य को भी स्वीकार करता है कि मनुष्यों द्वारा की जाने वाली संवृद्धि की प्राकृतिक सीमाएँ हैं। दूसरा, यह टिकाऊ समाज के रूप में वैकल्पिक समाज की रूपरेखा पेश करता है। तीसरा, यह इस समाज को हासिल करने के लिये कई रणनीतियों को रेखांकित करता है। दरअसल, संवृद्धि की सीमा थीसिस के बाद पर्यावरणीय दर्शन में मानव-केंद्रवाद और पारिस्थितिक-केंद्रवाद संबंधी विवाद को काफी बढ़ावा मिला।

(शब्द संख्या-302)

50. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये-

1. मनुष्य द्वारा की जाने वाली संवृद्धि की प्राकृतिक सीमाएँ हैं अतः हमे पर्यावरण को महत्त्व देना होगा।

2. पारिस्थितिकवाद के अनुसार मनुष्य और प्रकृति के संबंधों में नए सिरे से विचार होना चाहिये।

3. वर्तमान समय में पर्यावरण से जुड़े मुद्दे राजनीतिक वाद-विवाद के केंद्र में आए हैं। और कई देशों में ग्रीन पार्टियों का उभार हुआ है।

4. यह टिकाऊ समाज के रूप में वैकल्पिक समाज की रूपरेखा पेश नहीं करता है-

निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन असत्य है/ हैं

(a) केवल 1

(b) केवल 4

(c) सभी

(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

गद्यांश-46 (दर्शन)

- परमतत्त्व के नियम द्वारा सिद्ध होने वाली सबसे बड़ी बात यह है कि एक प्रकार की प्राकृतिक शक्ति परिणाम द्वारा दूसरे प्रकार की प्राकृतिक शक्ति का रूप धारण कर सकती है। शब्द और ताप, प्रकाश और विद्युत् आदि शक्तियाँ एक दूसरे के रूप में परिवर्तित की जा सकती हैं। वे एक ही मूलशक्ति के भिन्न-भिन्न रूप मात्र हैं। इस प्रकार सब प्राकृतिक शक्तियों की मौलिक एकता या अद्वैतता सिद्ध होती है। यह सिद्धांत भौतिक विज्ञान और रसायन शास्त्र में, जहाँ तक उनका संबंध जड़ पदार्थों से है, सर्वस्वीकृत है, पर सजीव सृष्टि के संबंध में यह बात नहीं है।

- शरीर के बहुत से व्यापारों का तो भौतिक और रासायनिक शक्ति के द्वारा प्रकाश और विद्युत् के प्रभाव से होना प्रत्यक्ष रूप से बतलाया जा सकता है। ये व्यापार भौतिक और रासायनिक कारणों से होते हैं, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं, पर कुछ व्यापार ऐसे हैं, विशेषकर मनोव्यापार और चेतना, जिनके यदि भौतिक और रासायनिक कारण बतलाए जाते हैं तो लोग विरोध करते हैं।

(शब्द संख्या-163)

Source: प्रकृति की अद्वैत सत्ता: रामचंद्र शुक्ल

51. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों पर विचार करें

1. चेतना का निर्माण निश्चित रासायनिक गुणों से होता है

2. प्रकृति की एकल सत्ता है

निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं-

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) न तो 1 न ही 2

(d) 1 और 2 दोनों

गद्यांश-47 (साहित्य)

- सत्य की खोज करना ही सच्चे विज्ञान का काम है। प्रत्येक विज्ञान इस बात का प्रयत्न करता है कि सत्य का ज्ञान प्राप्त हो। प्रकृति का ज्ञान ही हमारा वास्तविक ज्ञान है। यह उन अंतराभासों से संघटित होता है, जिनका बाह्यपदार्थों से बिंब-प्रतिबिंब संबंध होता है। यह ठीक है कि हमारी बुद्धि इस जगत् की आभ्यंतर सत्ता या वास्तविक स्वरूप तक नहीं पहुँच सकती, पर विशुद्ध विज्ञान दृष्टि से विचार करने पर हम देखते हैं कि ज्ञानेंद्रियों और मस्तिष्क की अविकृत क्रियाओं के द्वारा, बाह्य जगत् के जो अनुभव होते हैं वे सब मनुष्यों में समान होते हैं और अंत:करण की अविकृत क्रियाओं के द्वारा कुछ ऐसे अंतराभास उत्पन्न होते हैं, जो सर्वत्र एक होते हैं। ऐसे अंतराभासों को हम 'सत्य' कहते हैं, क्योंकि हमें इस बात का निश्चय रहता है कि वे वस्तुओं के ज्ञेय स्वरूप के ठीक प्रतिबिंब हैं।

(शब्द संख्या-142)

Source: ज्ञान और विश्वास: रामचंद्र शुक्ल

52. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-

1. सभी प्राणियों में सत्य का अनुभव एक सा होता है।
2. कुछ आंतरिक अनुभूतियाँ सभी प्राणियों में एक समान होती हैं। निम्नलिखित में से कौन सा /से कथन सत्य है/हैं-

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) न तो 1 न ही 2
(d) 1 और 2 दोनों

गद्यांश-48 (मनोविज्ञान)

❖ संसार के विस्तीर्ण कर्मक्षेत्र में सब प्राणियों द्वारा अगणित काम प्रतिदिन नहीं, प्रति घंटा, प्रति मिनट; यहाँ तक कि प्रतिपल होते रहते हैं। अच्छे कामों के संपादन में कुछ विशेष गुणों का परिचय किसी विशेष दशा में देना ही आत्मोत्सर्ग कहलाता है। अच्छे काम करने में ही आत्मोत्सर्ग किया जाता है, प्रत्येक अच्छे काम के करने में आत्मोत्सर्ग करने की आवश्यकता नहीं होती। अच्छे काम करने के लिये आत्मोत्सर्ग की विशेष आवश्यकता नहीं, परंतु यह निश्चित है कि आत्मोत्सर्ग सुकर्म के लिये ही किया जाता है। आत्मोत्सर्ग करने वाले में साहस का होना परमावश्यक है। संसार के सब काम, बड़े अथवा छोटे, बुरे अथवा भले, साहस के बिना नहीं होते हैं। बिना साहस के बड़े कामों का होना तो कठिन ही नहीं, असंभव-सा है। संसार के सभी महापुरुष, जिन्होंने बहुत-से विलक्षण खेल इस संसार रूपी नाट्यशाला में दिखलाकर इतिहास के पृष्ठों को अपने नाम से सुशोभित किया है, साहसी थे।

(शब्द संख्या-153)

Source: आत्मोत्सर्ग: गणेश शंकर विद्यार्थी

53. उपर्युक्त परिच्छेद से, निम्नलिखित में कौन सा सर्वाधिक तर्कसंगत और तार्किक निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(a) महापुरुष साहसी होते हैं

(b) आत्मोत्सर्ग कार्य के परिमाण पर निर्भर करता है

(c) हर बड़े कार्य के लिये आत्मोत्सर्ग अनिवार्य है

(d) बुरे काम बिना साहस के किये जा सकते हैं

गद्यांश-49 (साहित्य)

- घुमक्कड़ असंग और निर्लेप रहता है, यद्यपि मानव के प्रति उसके हृदय में अपार स्नेह है। यही अपार स्नेह उसके हृदय में अनंत प्रकार की स्मृतियाँ एकत्रित कर देता है। वह कहीं किसी से द्वेष करने के लिये नहीं जाता। ऐसे आदमी के अकारण द्वेष करने वाले भी कम हो सकते हैं, इसलिये उसे हर जगह से मधुर स्मृतियाँ ही जमा करने को मिलती हैं। हो सकता है, तरुणाई के गरम खून या अनुभव-हीनता के कारण घुमक्कड़ कभी किसी के साथ अन्याय कर बैठें, इसके लिये उसे सावधान कर देना आवश्यक है। घुमक्कड़ कभी स्थायी बंधु-बांधवों को नहीं पा सकता, किंतु जो बंधु-बांधव उसे मिलते हैं, उनमें अस्थायी साकार बंधु-बांधव ही नहीं बल्कि कितने ही स्थायी निराकार भी होते हैं, जो कि उसकी स्मृति में रहते हैं। स्मृति में रहने पर भी वह उसी तरह हर्ष-विषाद पैदा करते हैं, जैसे कि साकार बंधुजन।

(शब्द संख्या-147)

Source: स्मृतियाँ: राहुल सांकृत्यायन

54. उपर्युक्त परिच्छेद के निहितार्थ क्या हैं-

1. लेखक ने घुमक्कड़ के माध्यम से घूमने-फिरने अर्थात-पर्यटन के महत्त्व को रेखांकित किया है।
2. लेखक के अनुसार घुमक्कड़ प्रवृत्ति जीवन में अस्थायित्त्व लाती है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं-

(a) केवल 1

(c) 1 और 2 दोनों

(b) केवल 2

(d) न तो 1 और न ही 2

55. उपर्युक्त परिच्छेद के अनुसार कौन सा/से कथन असत्य है/हैं-

1. घुमक्कड़ प्रवृत्ति वाला व्यक्ति स्थायी बांधवों को पा सकता है।
2. घुमक्कड़ व्यक्ति से अकारण द्वेष करने वाले भी कम हो सकते हैं।
3. घुमक्कड़ व्यक्ति के हृदय में अनंत प्रकार की स्मृतियाँ एकत्रित होती हैं।
4. घुमक्कड़ प्रवृत्ति जीवन व समाज के प्रति पलायनवादिता को दर्शाता हैं।

(a) a और d दोनों
(b) a, b, c तीनों
(c) सभी
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

THANK YOU!